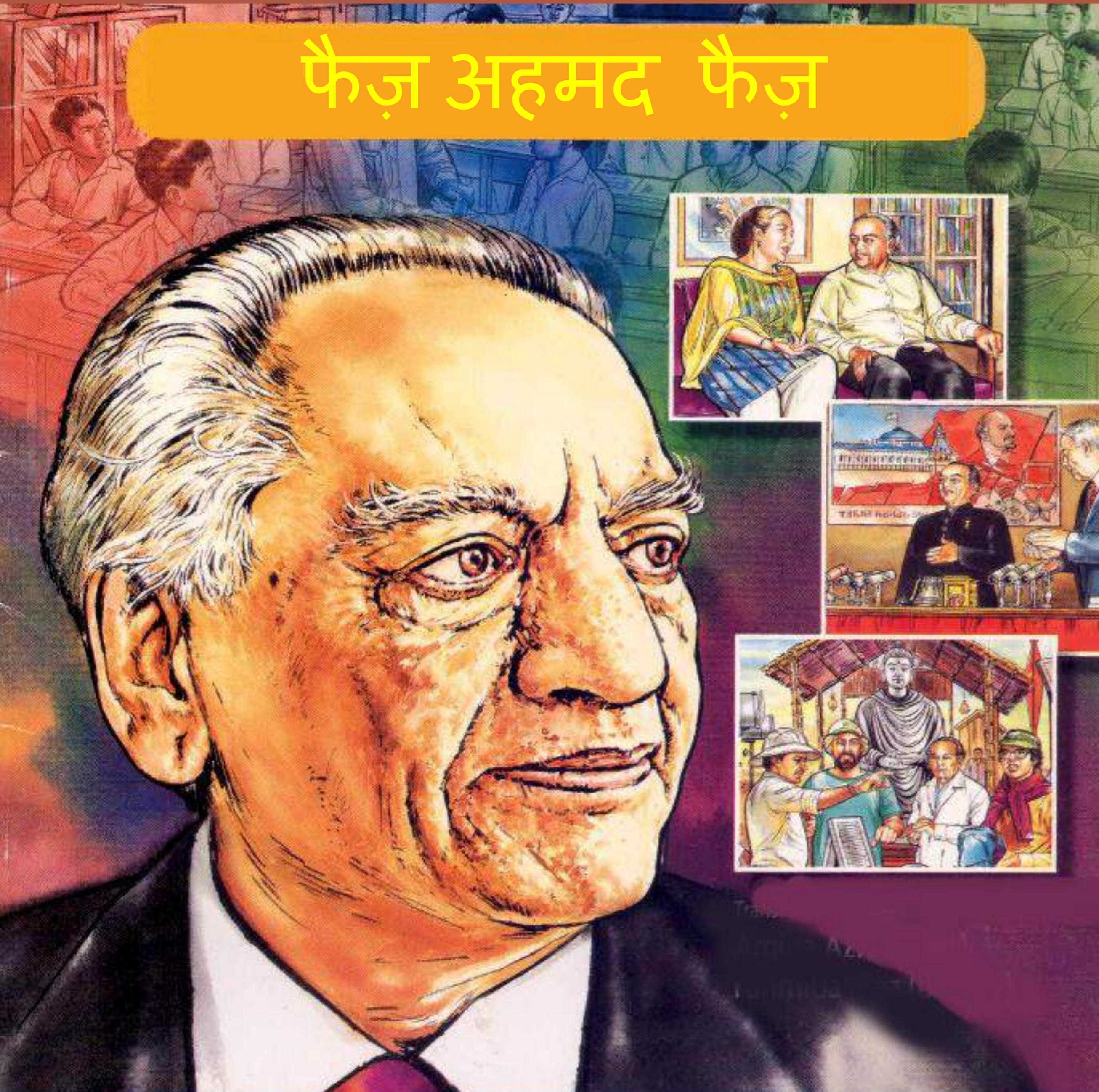
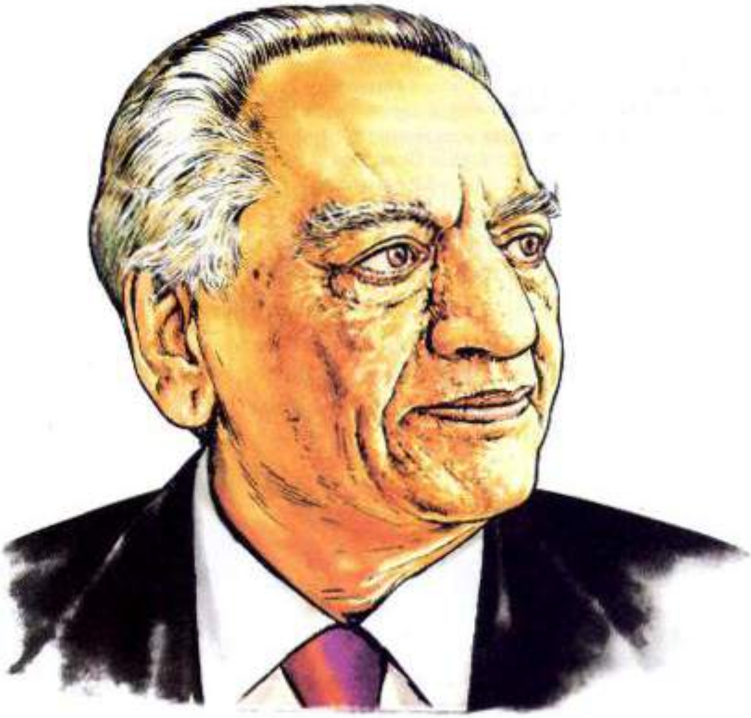
फैज़ अहमद फैज़

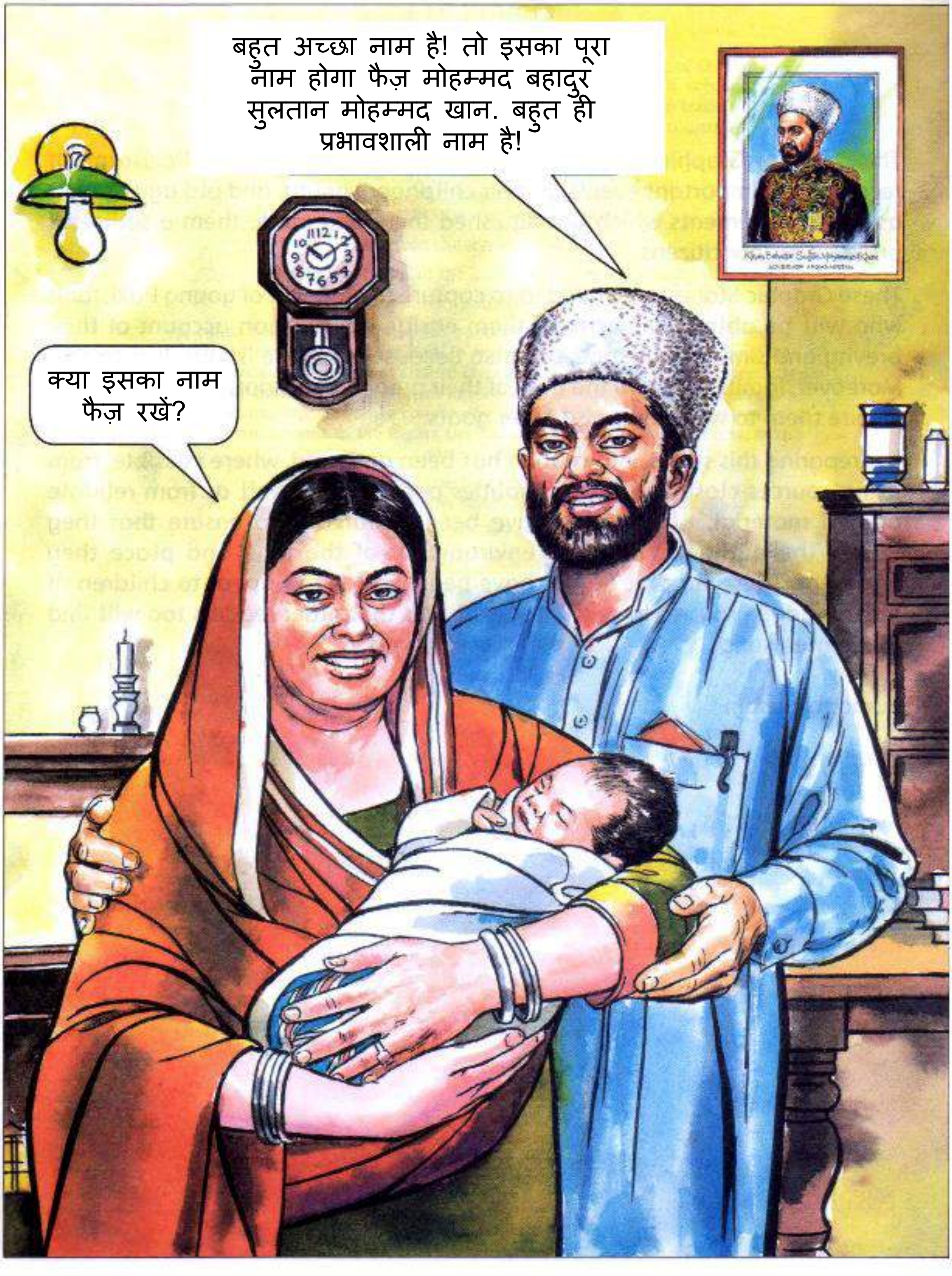


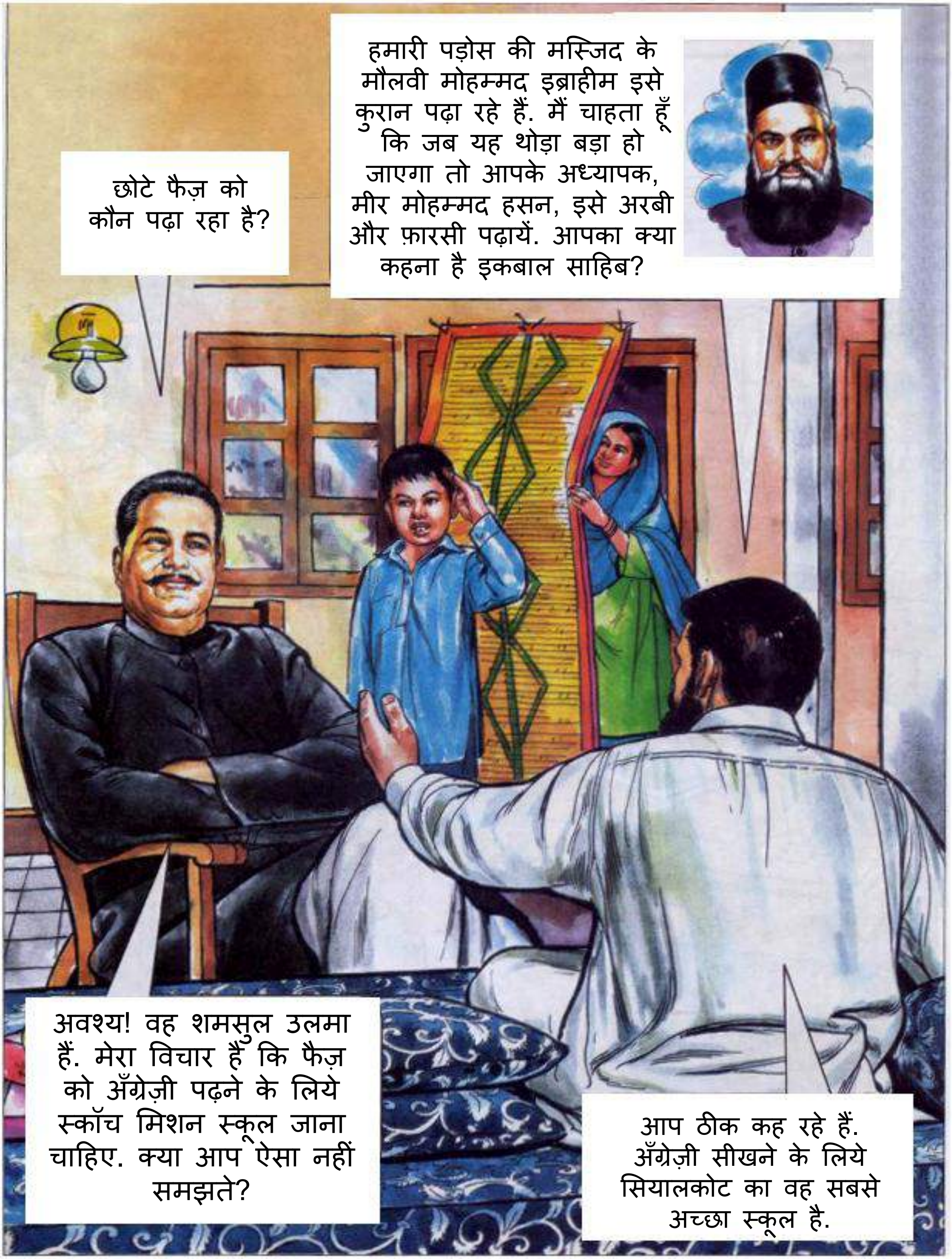
रुमाना हुसैन

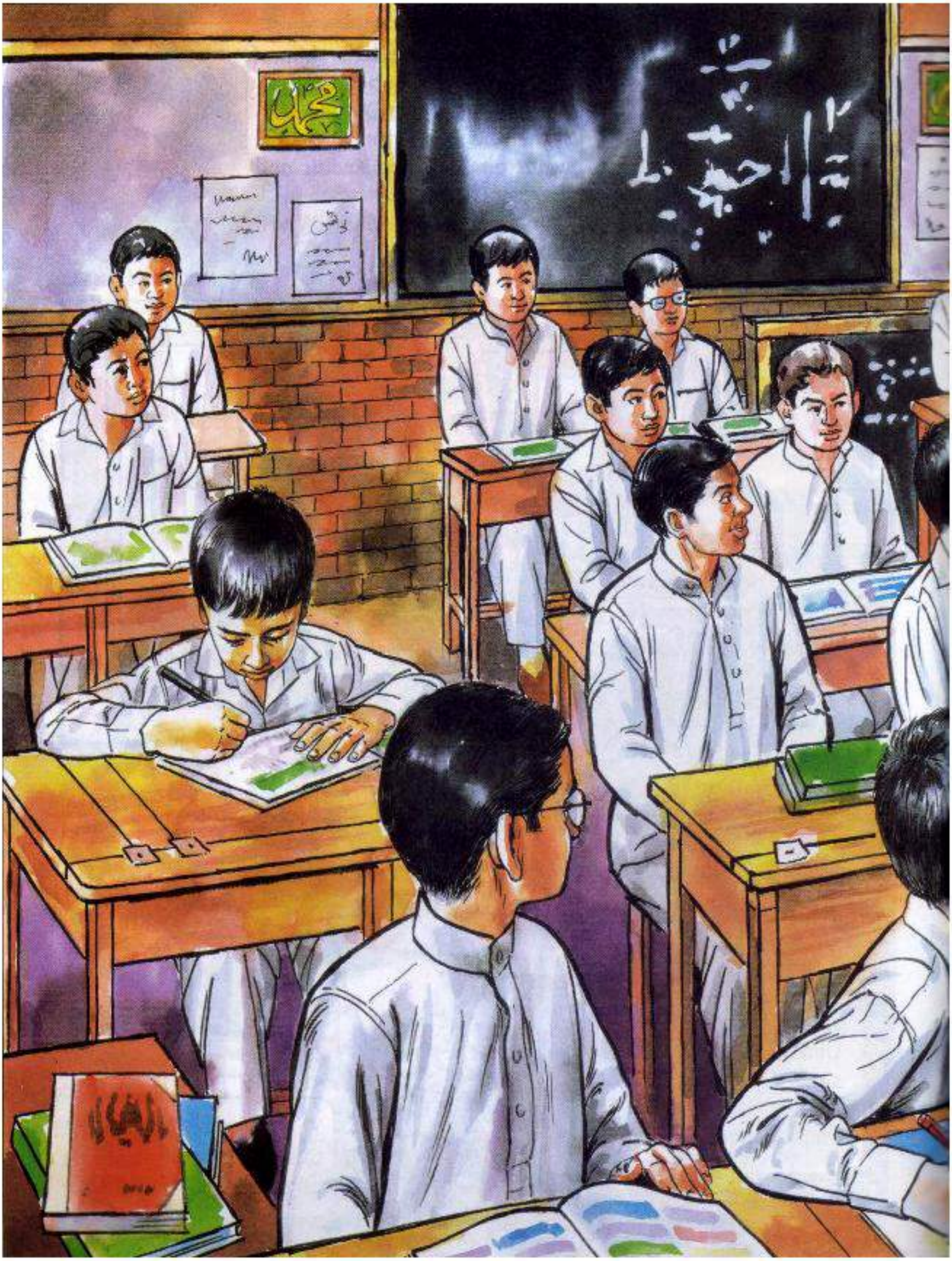
फैज़ अहमद फैज़

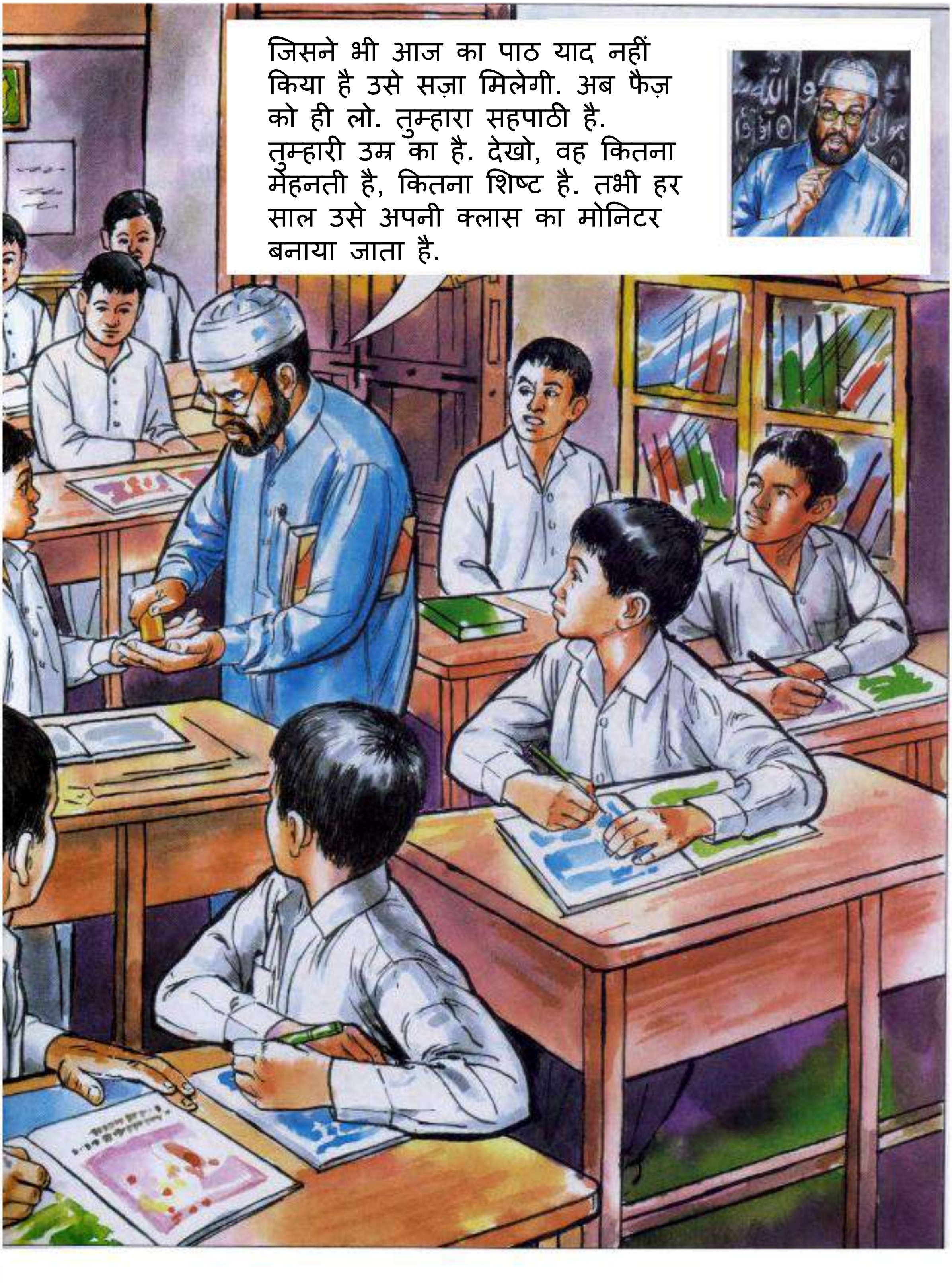


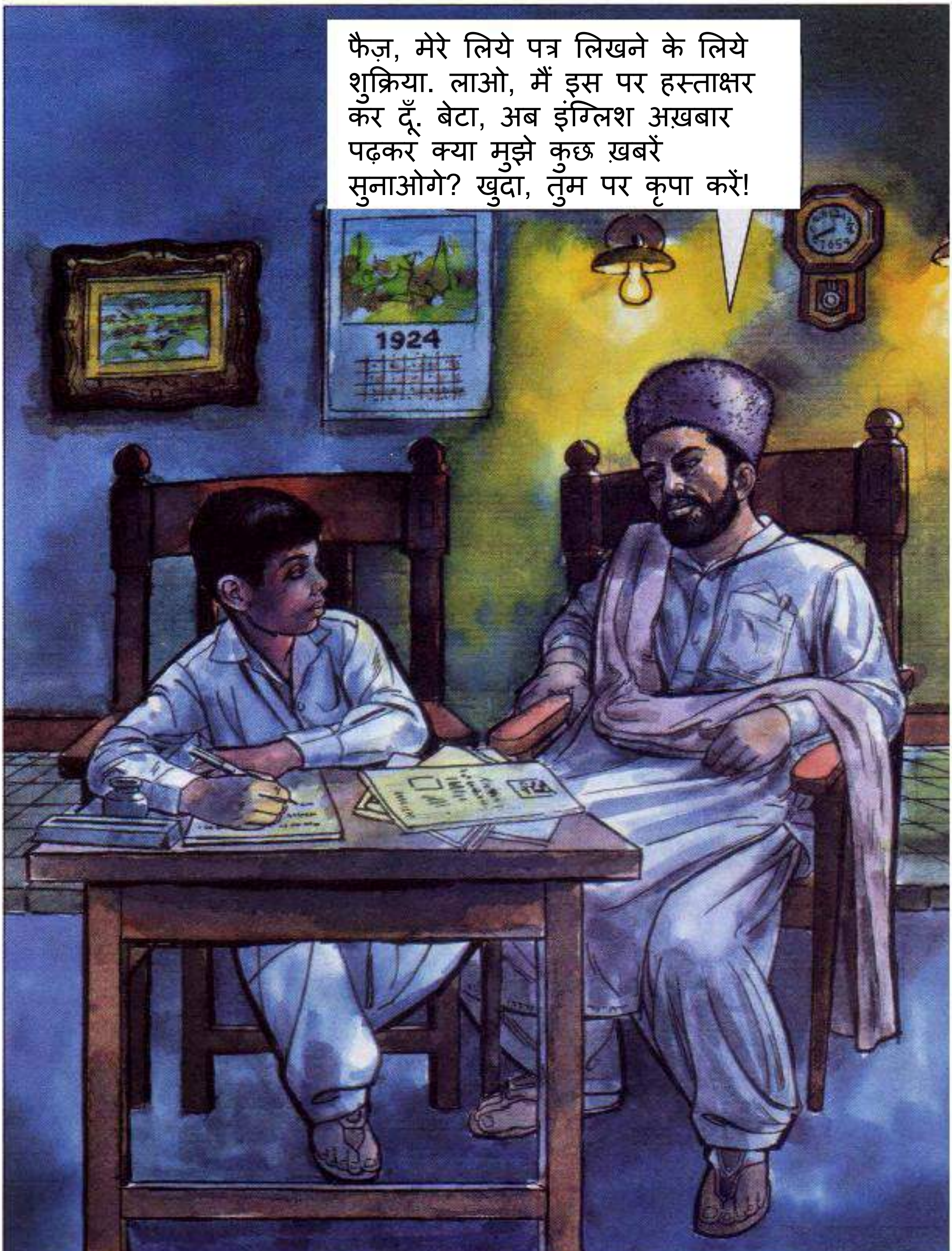
रुमाना हुसैन


क्या इसका नाम फैज़ रखें?
बहुत अच्छा नाम है! तो इसका पूरा नाम होगा फैज़ मोहम्मद बहादुर सुलतान मोहम्मद खान. बहुत ही प्रभावशाली नाम है!

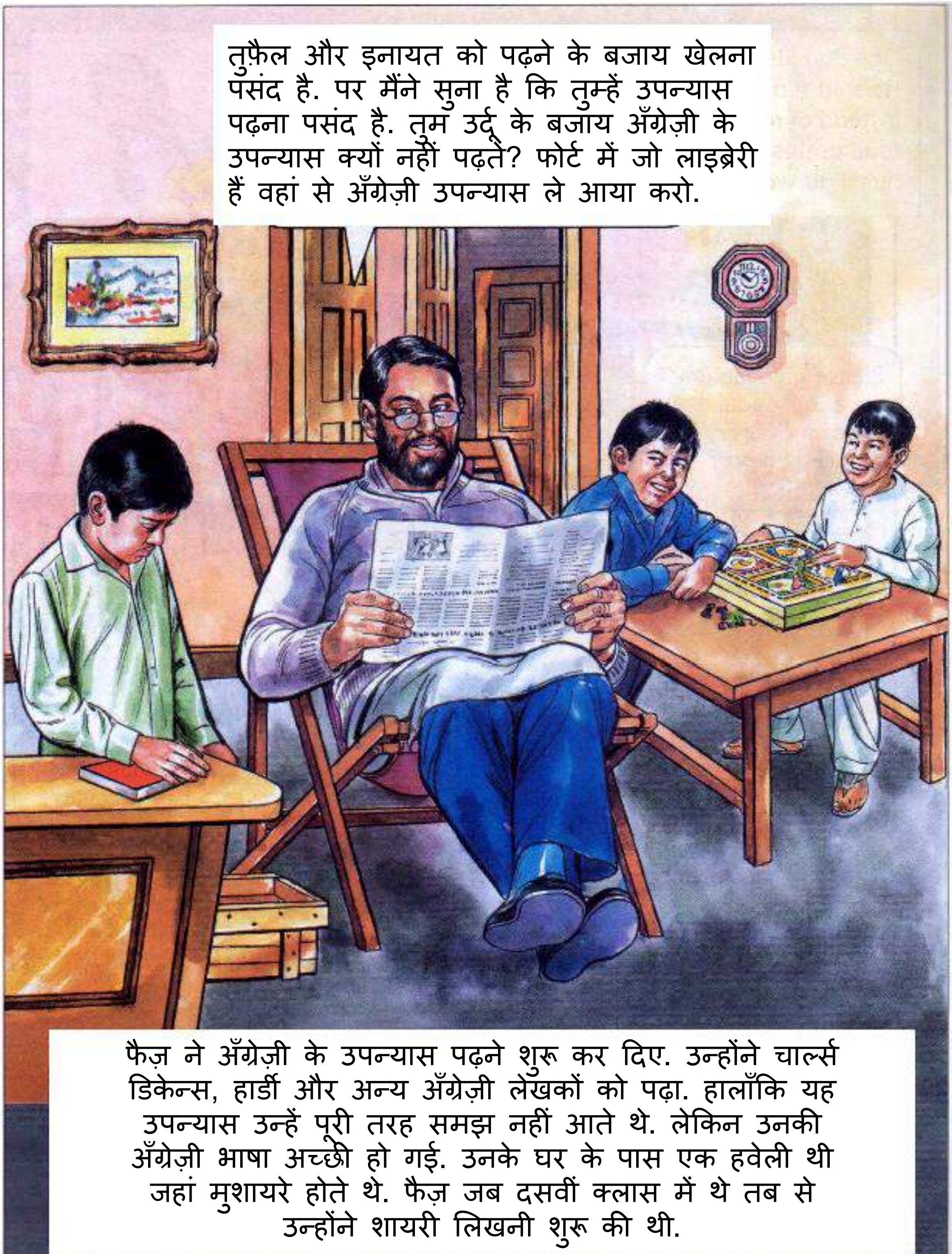

छोटे फैज़ को कौन पढ़ा रहा है?
हमारी पड़ोस की मस्जिद के मौलवी मोहम्मद इब्राहीम इसे कुरान पढ़ा रहे हैं. मैं चाहता हूँ कि जब यह थोड़ा बड़ा हो जाएगा तो आपके अध्यापक, मीर मोहम्मद हसन, इसे अरबी और फ़ारसी पढ़ायें. आपका क्या कहना है इकबाल साहिब?
अवश्य! वह शमसुल उलमा हैं. मेरा विचार है कि फैज़ को अँग्रेज़ी पढ़ने के लिये स्कॉच मिशन स्कूल जाना चाहिए. क्या आप ऐसा नहीं समझते?
आप ठीक कह रहे हैं. अँग्रेज़ी सीखने के लिये सियालकोट का वह सबसे अच्छा स्कूल है.

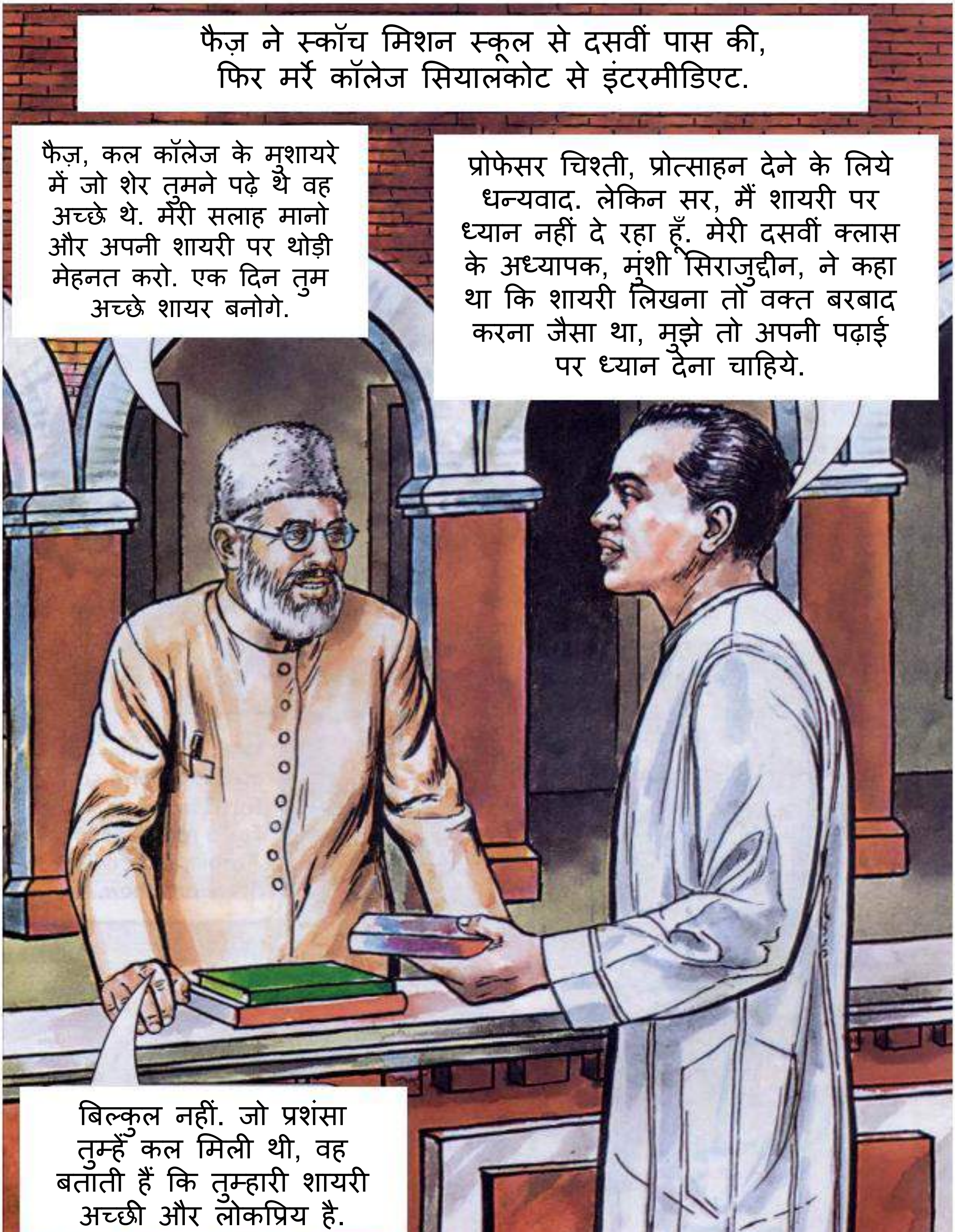

محمد

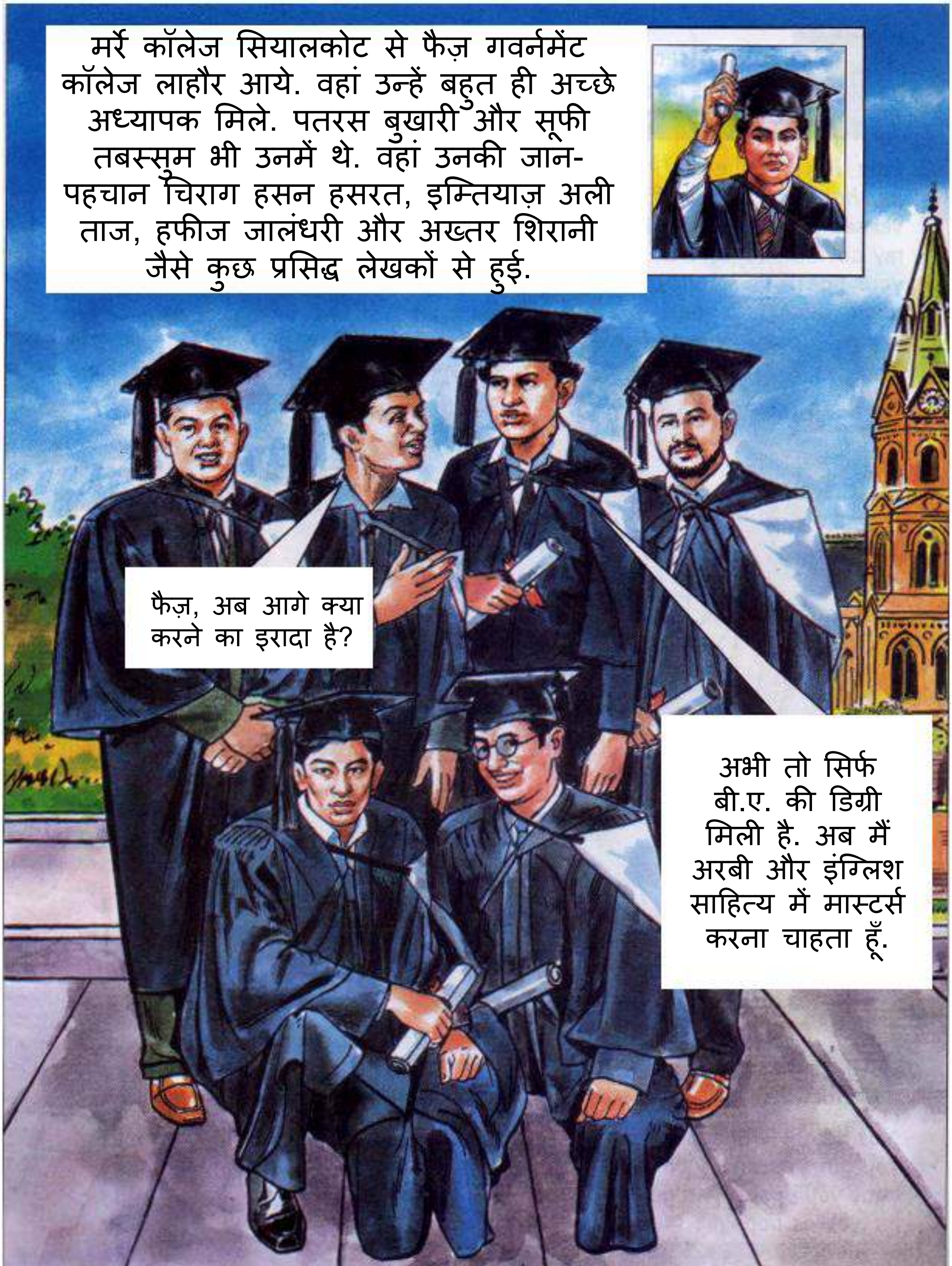

जिसने भी आज का पाठ याद नहीं किया है उसे सज़ा मिलेगी. अब फैज़ को ही लो. तुम्हारा सहपाठी है. तुम्हारी उम्र का है. देखो, वह कितना मेहनती है, कितना शिष्ट है. तभी हर साल उसे अपनी क्लास का मोनिटर बनाया जाता है.

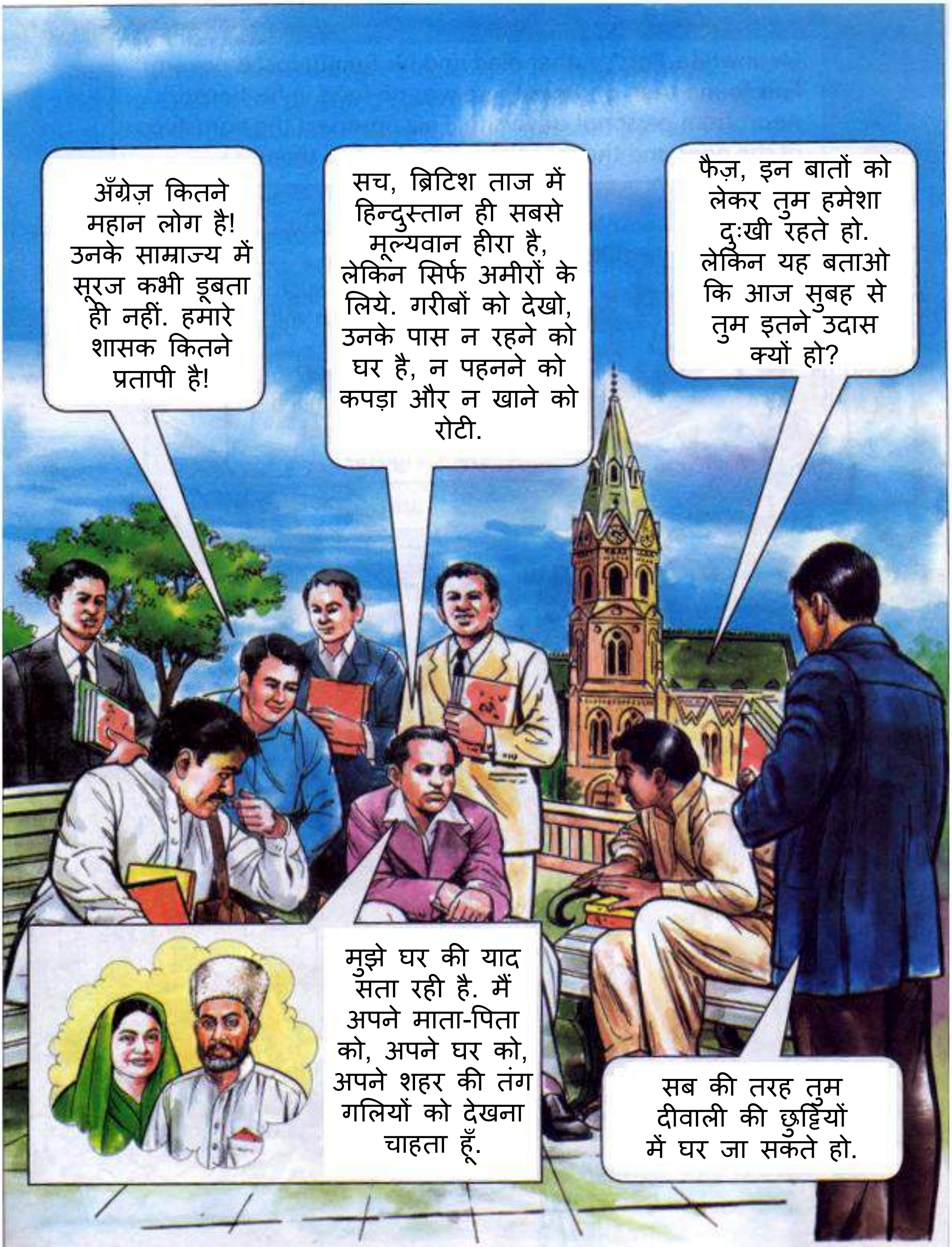

फैज़, मेरे लिये पत्र लिखने के लिये शुक्रिया. लाओ, मैं इस पर हस्ताक्षर कर दूँ. बेटा, अब इंग्लिश अख़बार पढ़कर क्या मुझे कुछ ख़बरें सुनाओगे? खुदा, तुम पर कृपा करें!
1924

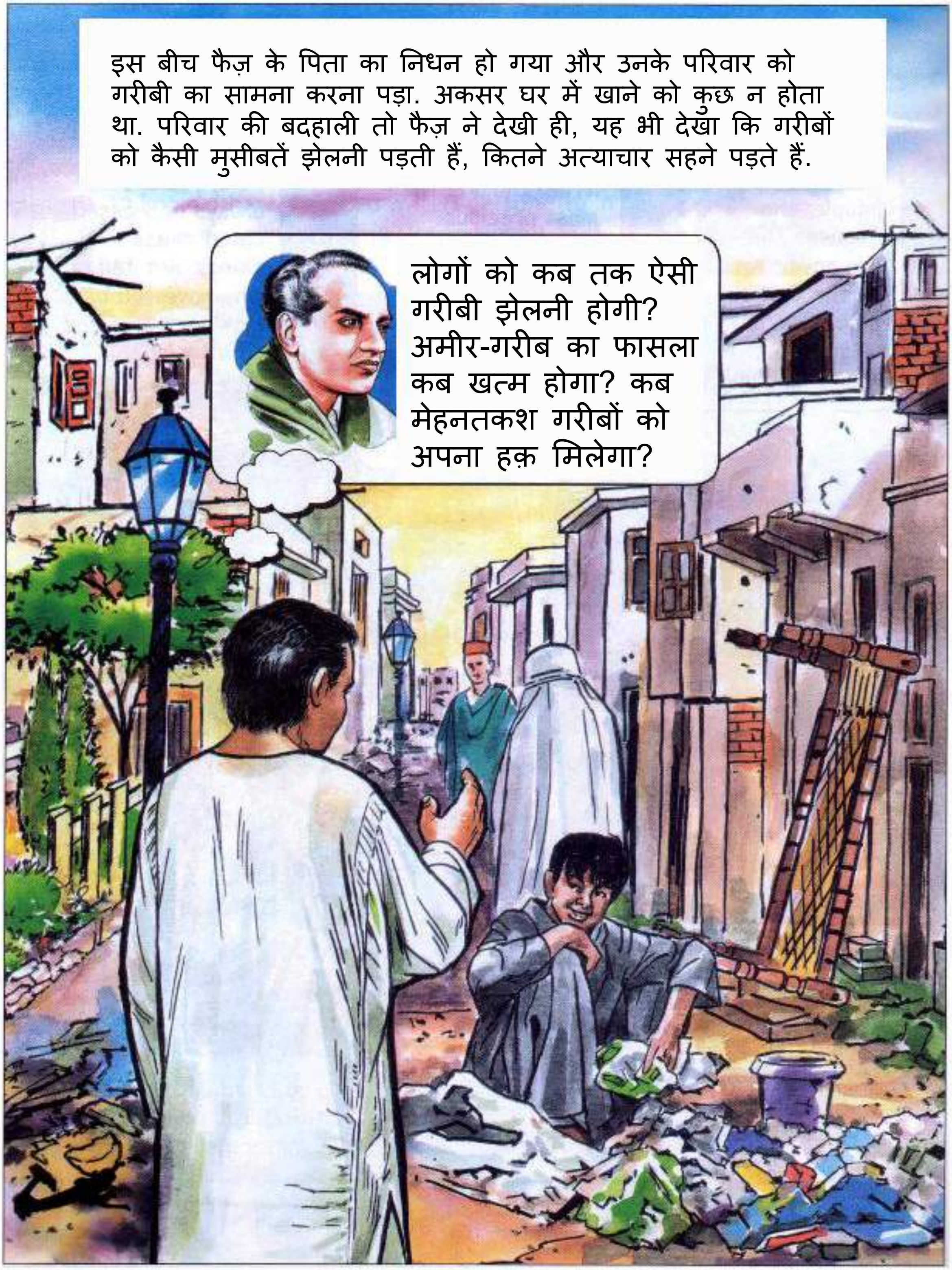

एक दिन उनके पिता का मुंशी उन पर नाराज़ हुआ. उसने कहा, “मैं तुम्हारे अब्बा से शिकायत करूंगा कि अपनी स्कूल की किताबें पढ़ने के बजाय तुम चोरी-छिपे घटिया उपन्यास पढ़ते रहते हो”. जब उसके अब्बा ने उसे बुलाया तो फैज़ थोड़े घबराए हुए थे.
कृपया मुझे अब्दुल हलीम शरार का कोई उपन्यास दें. मैं अगले हफ़्ते लौटा दूंगा.
फैज़, तुम हमेशा अपनी किताब एक हफ़्ते के अंदर लौटा देते हो. यह रही तुम्हारी किताब. इसके तुम्हें दो पैसे देने होंगे.


तुफ़ैल और इनायत को पढ़ने के बजाय खेलना पसंद है. पर मैंने सुना है कि तुम्हें उपन्यास पढ़ना पसंद है. तुम उर्दू के बजाय अँग्रेज़ी के उपन्यास क्यों नहीं पढ़ते? फोर्ट में जो लाइब्रेरी हैं वहां से अँग्रेज़ी उपन्यास ले आया करो.
फैज़ ने अँग्रेज़ी के उपन्यास पढ़ने शुरू कर दिए. उन्होंने चार्ल्स डिकेन्स, हार्डी और अन्य अँग्रेज़ी लेखकों को पढ़ा. हालाँकि यह उपन्यास उन्हें पूरी तरह समझ नहीं आते थे. लेकिन उनकी अँग्रेज़ी भाषा अच्छी हो गई. उनके घर के पास एक हवेली थी जहां मुशायरे होते थे. फैज़ जब दसवीं क्लास में थे तब से उन्होंने शायरी लिखनी शुरू की थी.

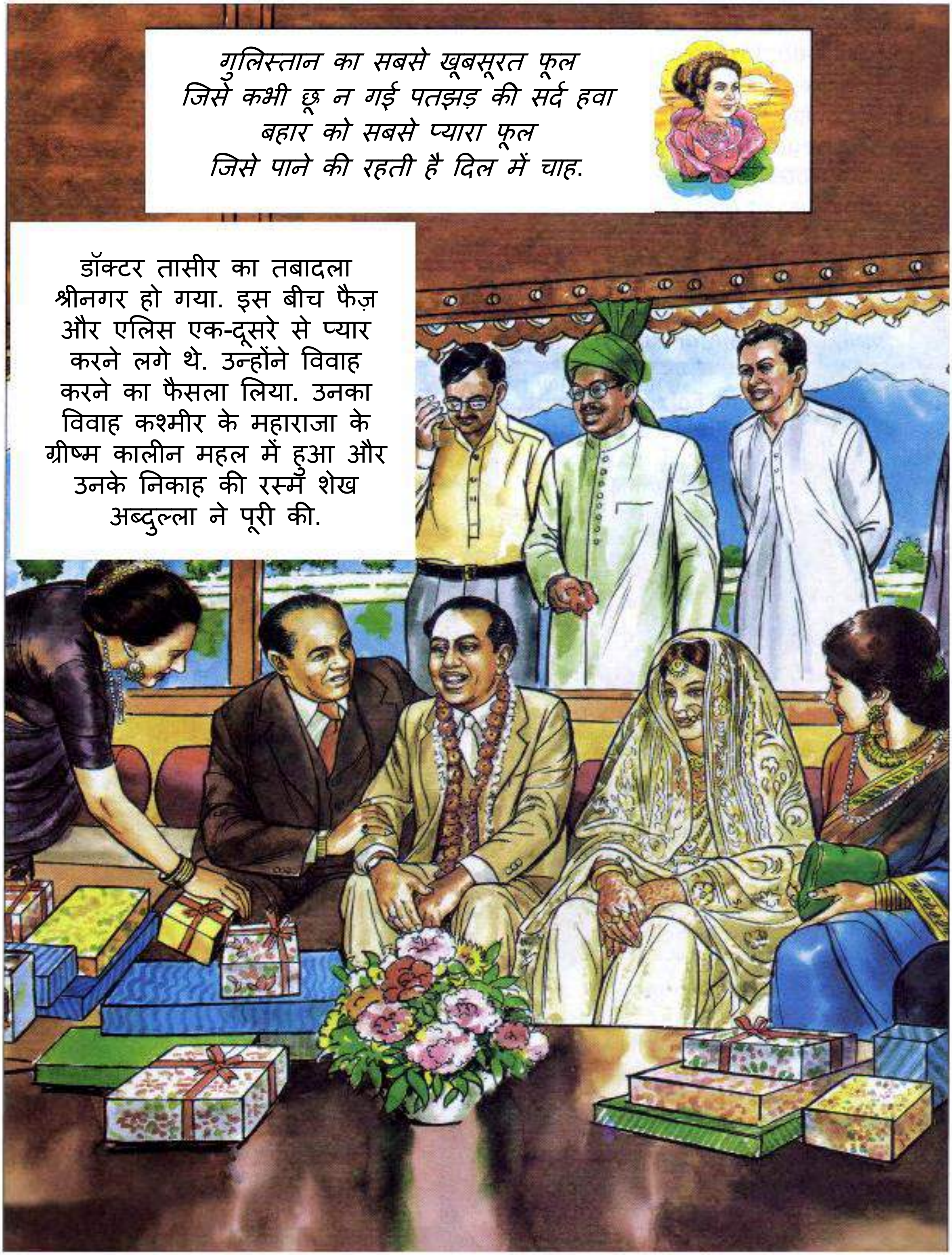

फैज़ ने स्कॉच मिशन स्कूल से दसवीं पास की, फिर मर्रे कॉलेज सियालकोट से इंटरमीडिएट.
फैज़, कल कॉलेज के मुशायरे में जो शेर तुमने पढ़े थे वह अच्छे थे. मेरी सलाह मानो और अपनी शायरी पर थोड़ी मेहनत करो. एक दिन तुम अच्छे शायर बनोगे.
प्रोफेसर चिश्ती, प्रोत्साहन देने के लिये धन्यवाद. लेकिन सर, मैं शायरी पर ध्यान नहीं दे रहा हूँ. मेरी दसवीं क्लास के अध्यापक, मुंशी सिराजुद्दीन, ने कहा था कि शायरी लिखना तो वक्त बरबाद करना जैसा था, मुझे तो अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिये.
बिल्कुल नहीं. जो प्रशंसा तुम्हें कल मिली थी, वह बताती हैं कि तुम्हारी शायरी अच्छी और लोकप्रिय है.


मर्रे कॉलेज सियालकोट से फैज़ गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर आये. वहां उन्हें बहुत ही अच्छे अध्यापक मिले. पतरस बुखारी और सूफी तबस्सुम भी उनमें थे. वहां उनकी जान-पहचान चिराग हसन हसरत, इम्तियाज़ अली ताज, हफीज जालंधरी और अख्तर शिरानी जैसे कुछ प्रसिद्ध लेखकों से हुई.
फैज़, अब आगे क्या करने का इरादा है?
अभी तो सिर्फ बी.ए. की डिग्री मिली है. अब मैं अरबी और इंग्लिश साहित्य में मास्टर्स करना चाहता हूँ.

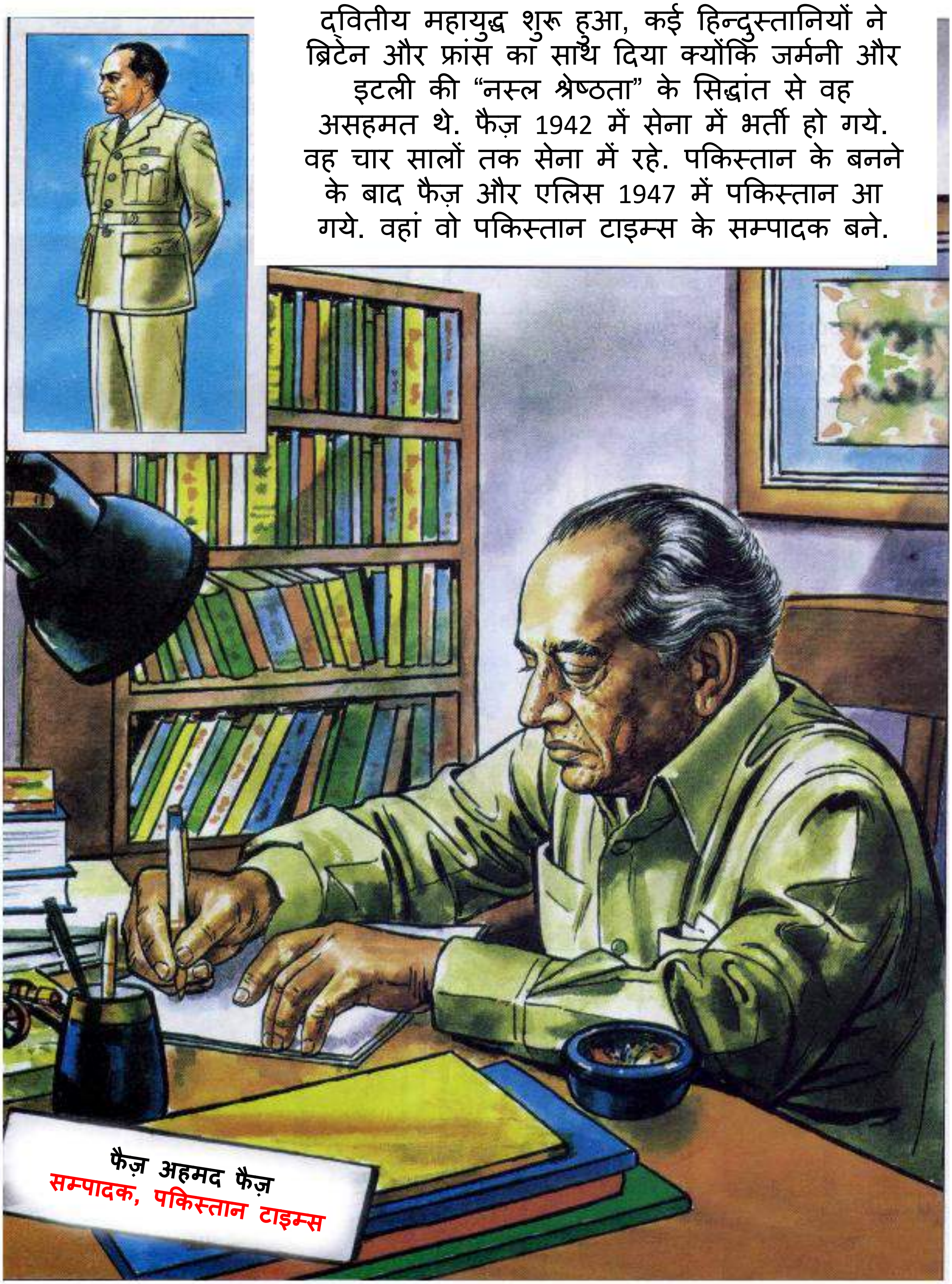

अँग्रेज़ कितने महान लोग है! उनके साम्राज्य में सूरज कभी डूबता ही नहीं. हमारे शासक कितने प्रतापी है!
सच, ब्रिटिश ताज में हिन्दुस्तान ही सबसे मूल्यवान हीरा है, लेकिन सिर्फ अमीरों के लिये. गरीबों को देखो, उनके पास न रहने को घर है, न पहनने को कपड़ा और न खाने को रोटी.
फैज़, इन बातों को लेकर तुम हमेशा दुःखी रहते हो. लेकिन यह बताओ कि आज सुबह से तुम इतने उदास क्यों हो?
मुझे घर की याद सता रही है. मैं अपने माता-पिता को, अपने घर को, अपने शहर की तंग गलियों को देखना चाहता हूँ.
सब की तरह तुम दीवाली की छुट्टियों में घर जा सकते हो.

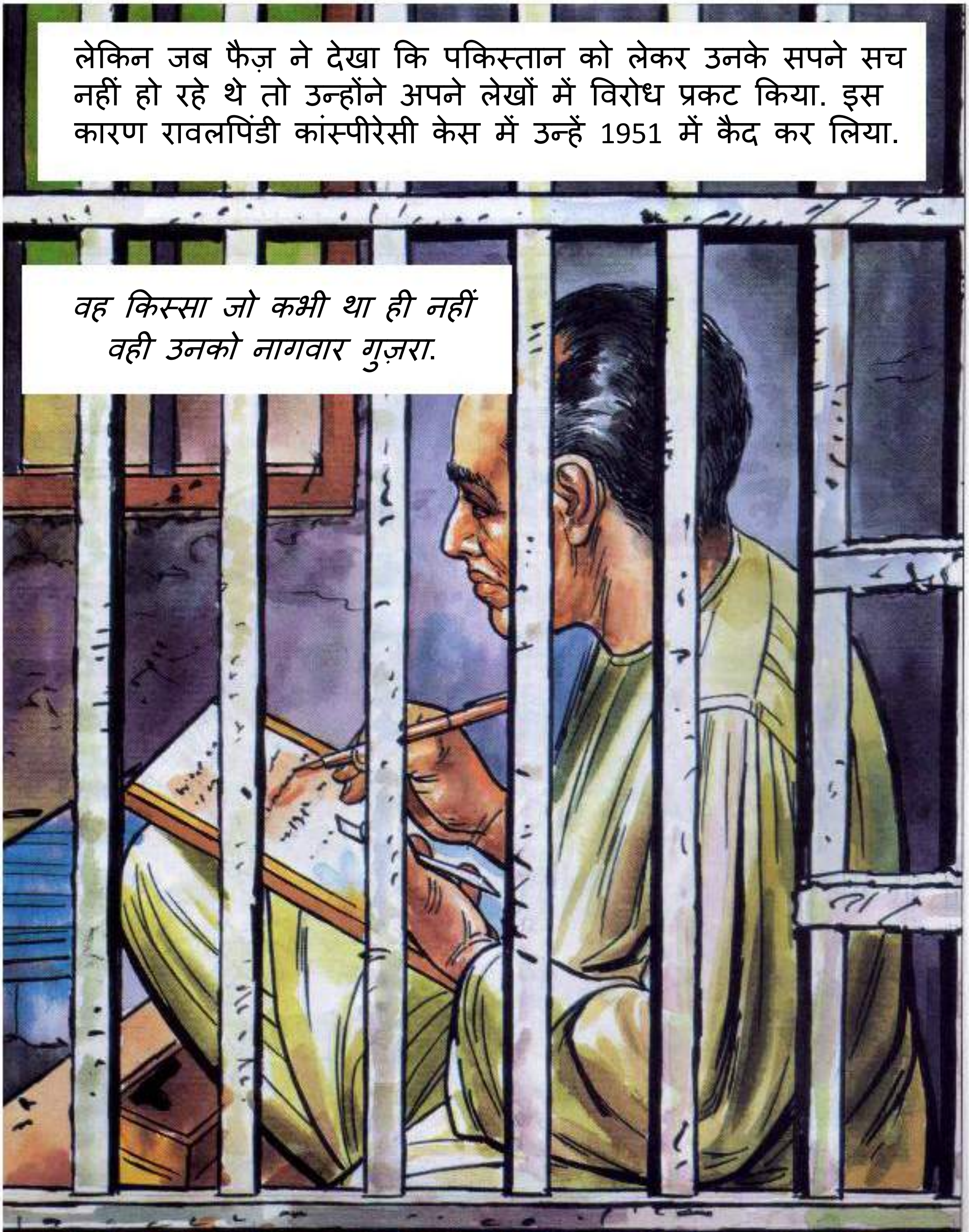

इस बीच फैज़ के पिता का निधन हो गया और उनके परिवार को गरीबी का सामना करना पड़ा. अकसर घर में खाने को कुछ न होता था. परिवार की बदहाली तो फैज़ ने देखी ही, यह भी देखा कि गरीबों को कैसी मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं, कितने अत्याचार सहने पड़ते हैं.
लोगों को कब तक ऐसी गरीबी झेलनी होगी? अमीर-गरीब का फासला कब खत्म होगा? कब मेहनतकश गरीबों को अपना हक़ मिलेगा?

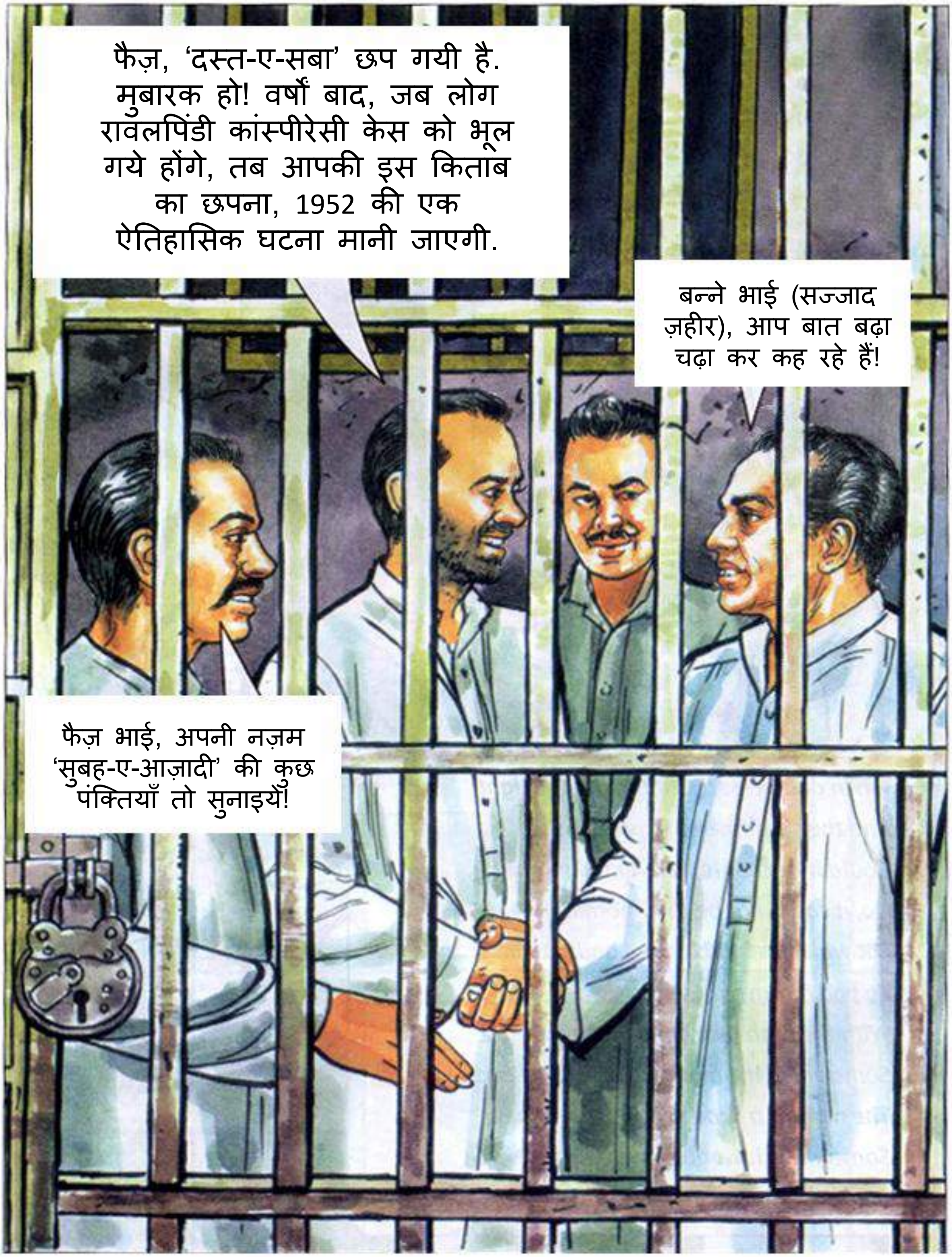

मास्टर्स की डिग्री पाने के बाद फैज़ अमृतसर के एमएओ कॉलेज में पढ़ाने लगे. उन्हें पढ़ाना अच्छा लगता था और विद्यार्थियों के साथ उनके दोस्ताना सम्बंध थे. कॉलेज के वाईस प्रिंसिपल, महमूद-उज़-ज़फर और उनकी पत्नी, डॉक्टर रशीद जहाँ, ने उन्हें बहुत प्रभावित किया. दोनों, लोगों की सेवा में संलग्न रहते थे. एमएओ कॉलेज में प्रोफेसर मोहम्मद दीन तासीर उनके सह-अध्यापकों में एक थे.
फैज़ अब पूरी रूचि से शायरी लिखने लगे थे. इसी काल में राजनीति में उनकी दिलचस्पी बढ़ी. वो सिविल लिबर्टीज़ एसोसिएशन के सदस्य बन गये. वह प्रोग्रेसिव रायटर्स मूवमेंट में भी शामिल हो गये और उस संस्था के लिये काम करने लगे.
मैं फैज़ हूँ. मैं डॉक्टर तासीर के एमएओ कॉलेज में पढ़ाता हूँ. आपसे मिलकर ख़ुशी हुई.
मुझे भी आप से मिलकर ख़ुशी हुई. मैं एलिस हूँ, मिसेज़ तासीर की छोटी बहन. अपनी बहन, क्रिस्टबल तासीर, के साथ छुट्टियाँ मनाने के लिये मैं इंग्लैंड से आई हूँ.
मिस्टर फैज़, उसकी छोटी उम्र से धोखा न खा जाना. वह पक्की मर्क्सिस्ट है. सच कहें तो वह एक बुद्धिजीवी है. संगीत, चित्रकला, थिएटर, सब में उसकी खूब रूचि है.

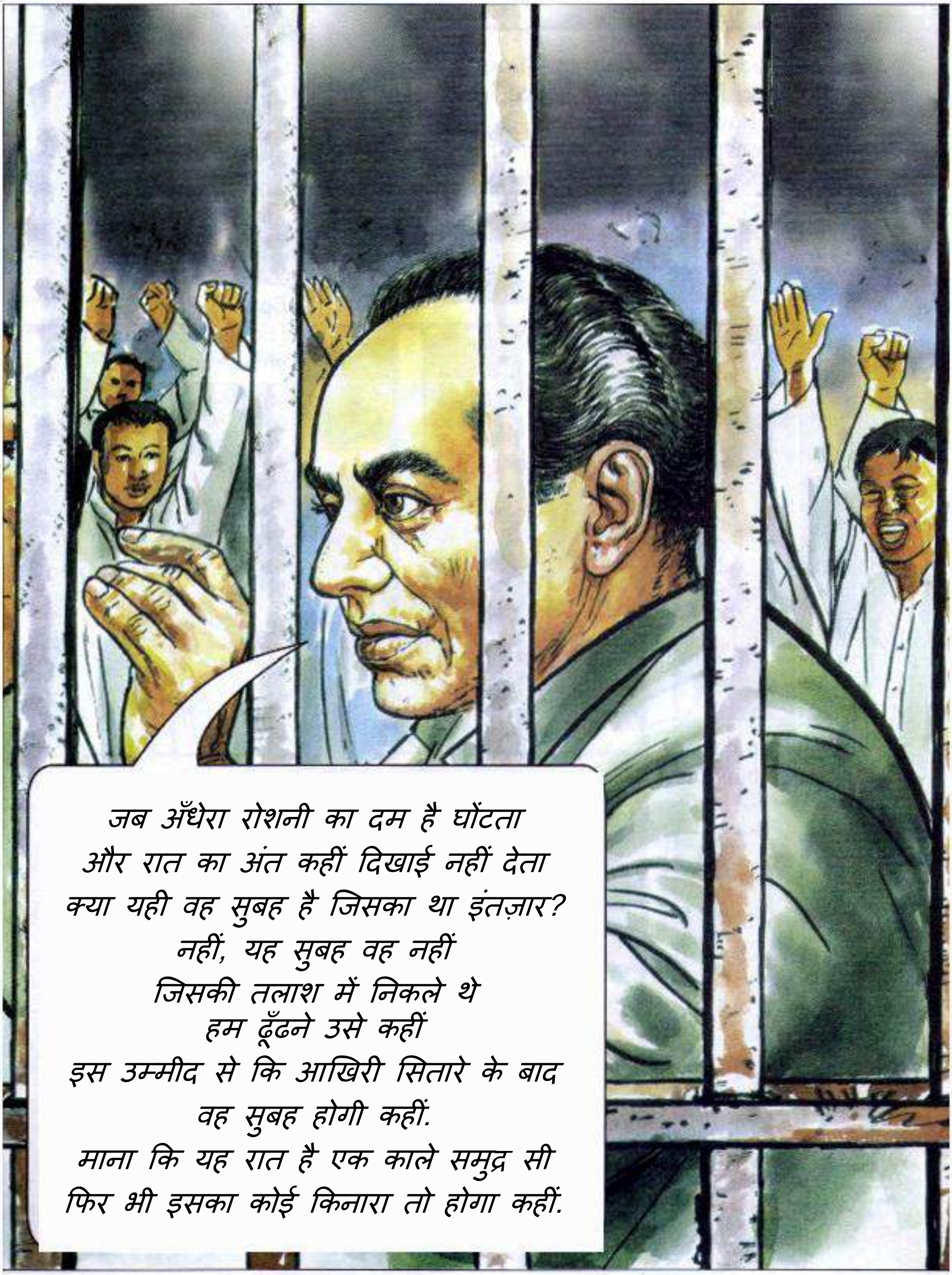

गुलिस्तान का सबसे खूबसूरत फूल
जिसे कभी छू न गई पतझड़ की सर्द हवा
बहार को सबसे प्यारा फूल
जिसे पाने की रहती है दिल में चाह.
डॉक्टर तासीर का तबादला श्रीनगर हो गया. इस बीच फैज़ और एलिस एक-दूसरे से प्यार करने लगे थे. उन्होंने विवाह करने का फैसला लिया. उनका विवाह कश्मीर के महाराजा के ग्रीष्म कालीन महल में हुआ और उनके निकाह की रस्म शेख अब्दुल्ला ने पूरी की.

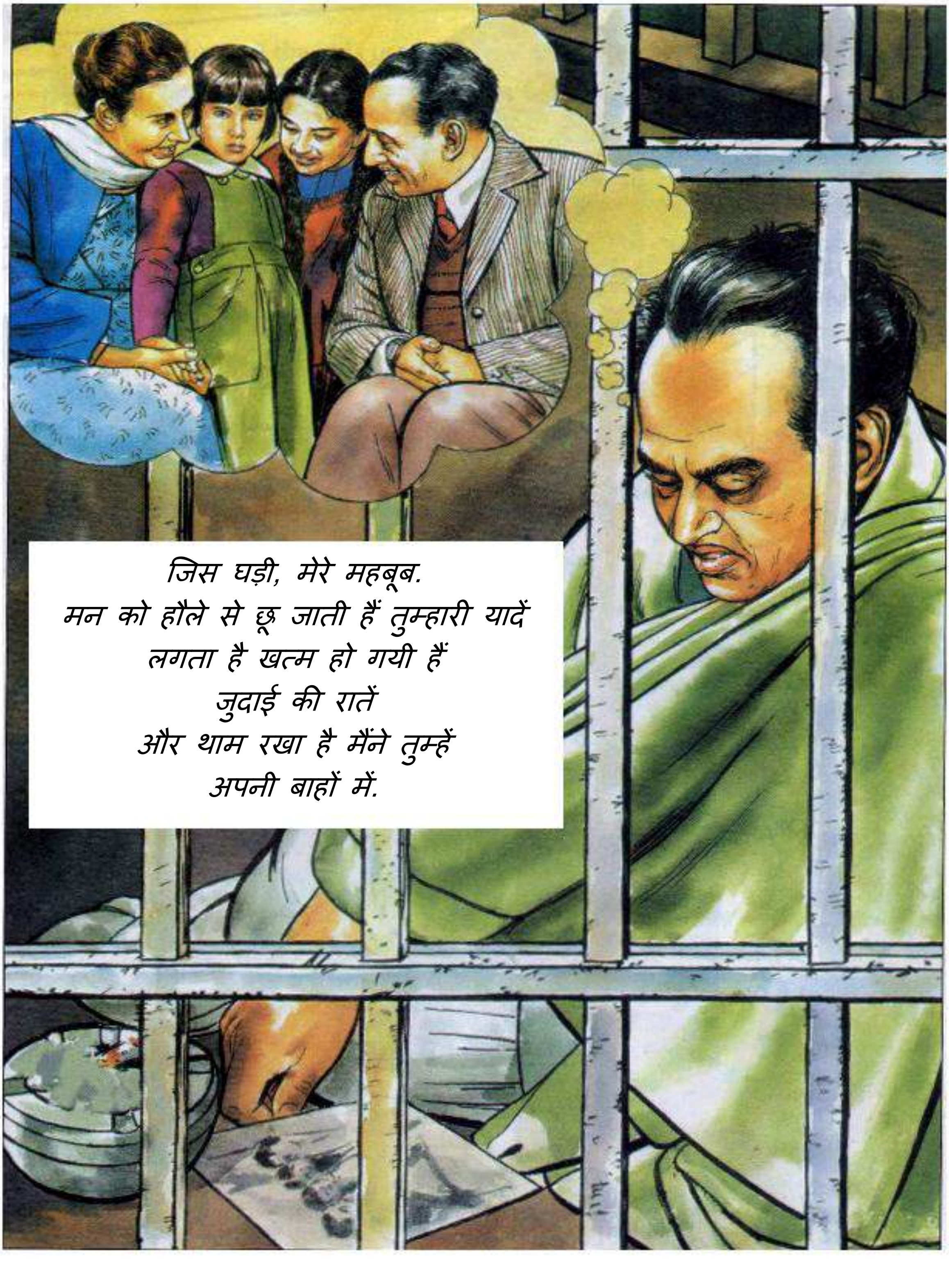
द्वितीय महायुद्ध शुरू हुआ, कई हिन्दुस्तानियों ने ब्रिटेन और फ्रांस का साथ दिया क्योंकि जर्मनी और इटली की "नस्ल श्रेष्ठता" के सिद्धांत से वह असहमत थे. फैज़ 1942 में सेना में भर्ती हो गये. वह चार सालों तक सेना में रहे. पकिस्तान के बनने के बाद फैज़ और एलिस 1947 में पकिस्तान आ गये. वहां वो पकिस्तान टाइम्स के सम्पादक बने.

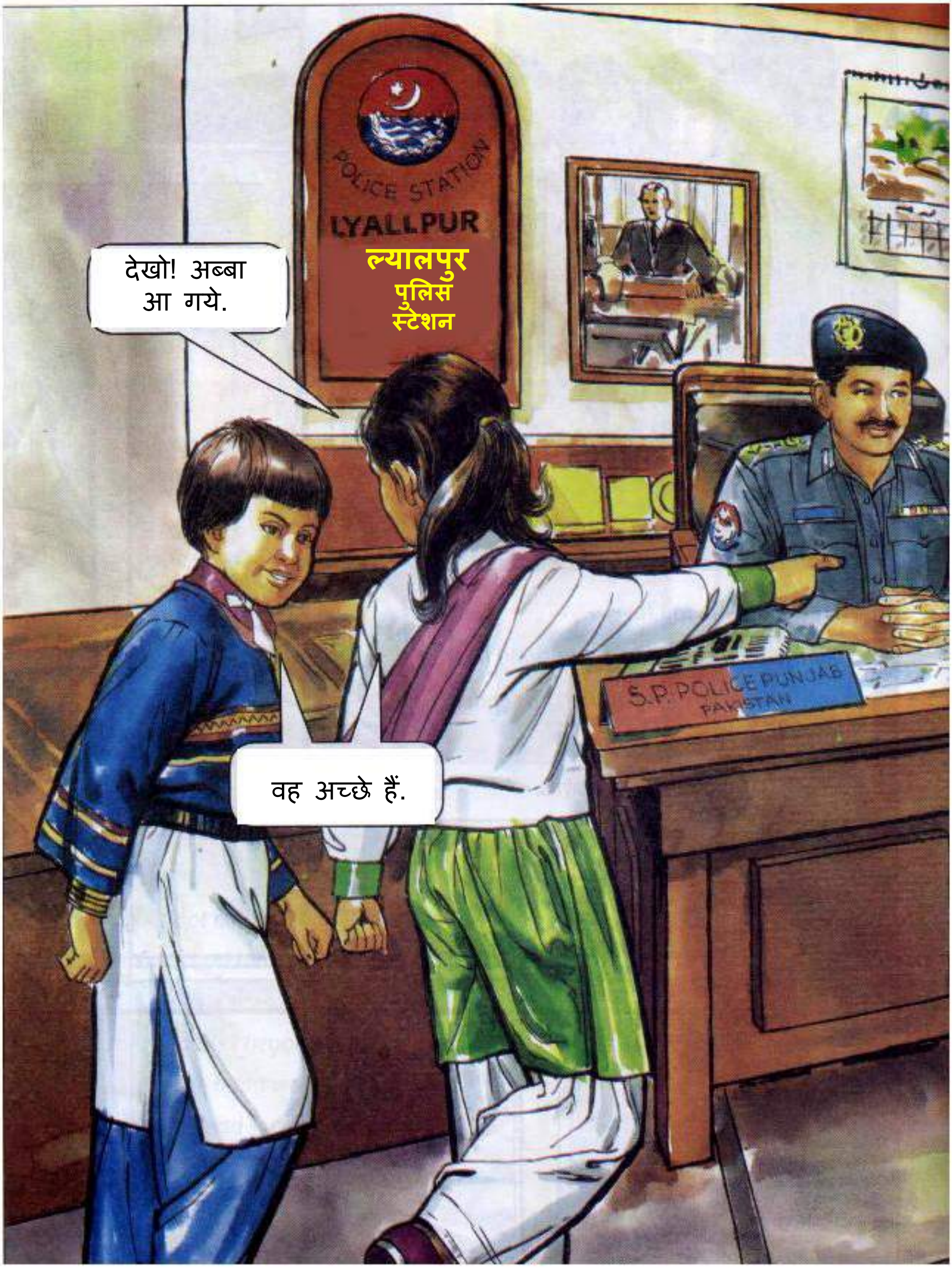


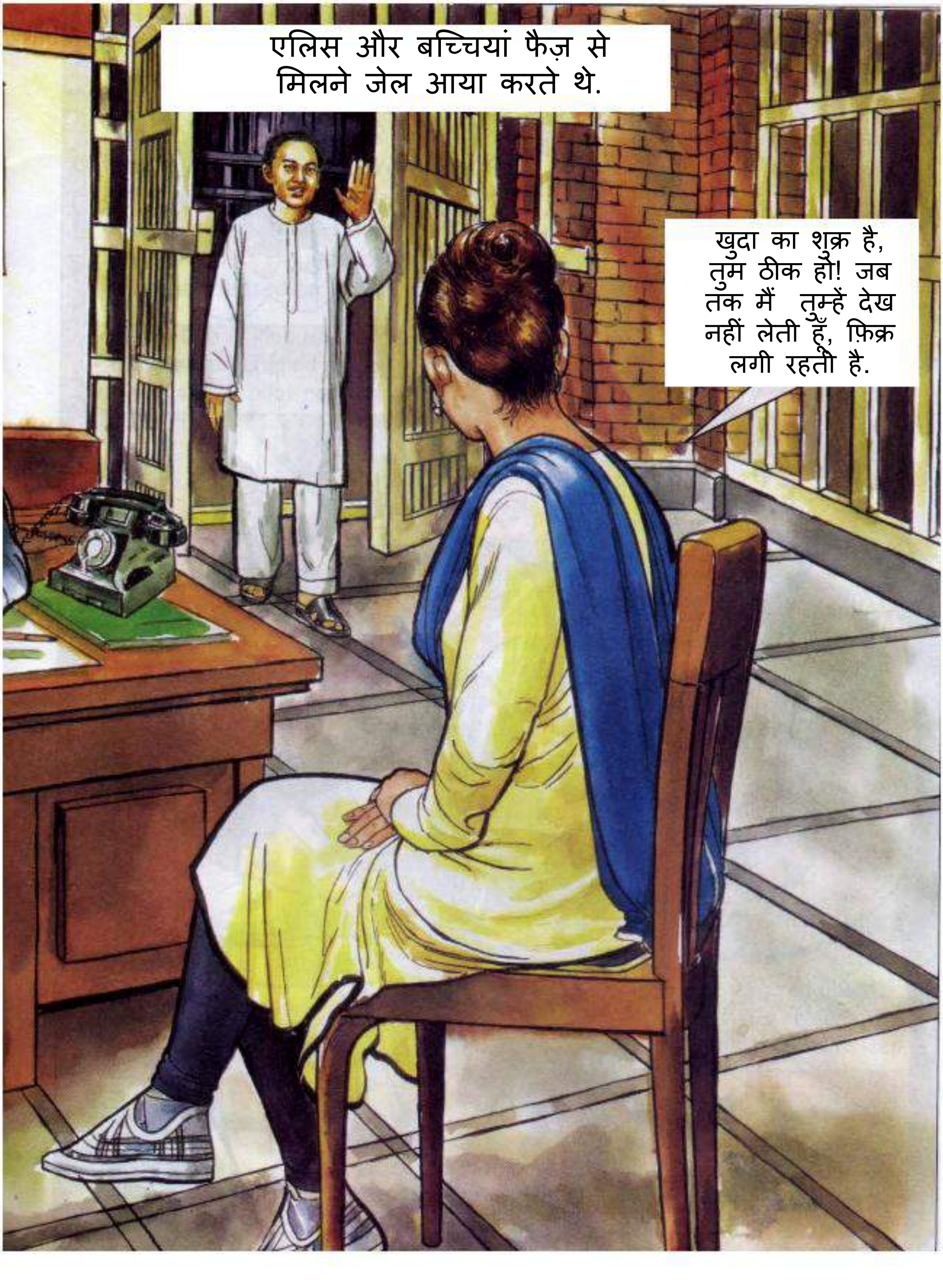

लेकिन जब फैज़ ने देखा कि पकिस्तान को लेकर उनके सपने सच नहीं हो रहे थे तो उन्होंने अपने लेखों में विरोध प्रकट किया. इस कारण रावलपिंडी कांस्पीरेसी केस में उन्हें 1951 में कैद कर लिया.
वह किस्सा जो कभी था ही नहीं
वही उनको नागवार गुज़रा.


फैज़, 'दस्त-ए-सबा' छप गयी है. मुबारक हो! वर्षों बाद, जब लोग रावलपिंडी कांस्पीरेसी केस को भूल गये होंगे, तब आपकी इस किताब का छपना, 1952 की एक ऐतिहासिक घटना मानी जाएगी.
बन्ने भाई (सज्जाद ज़हीर), आप बात बढ़ा चढ़ा कर कह रहे हैं!
फैज़ भाई, अपनी नज़्म 'सुबह-ए-आज़ादी' की कुछ पंक्तियाँ तो सुनाइये!


जब अँधेरा रोशनी का दम है घोंटता
और रात का अंत कहीं दिखाई नहीं देता
क्या यही वह सुबह है जिसका था इंतज़ार?
नहीं, यह सुबह वह नहीं
जिसकी तलाश में निकले थे
हम ढूँढने उसे कहीं
इस उम्मीद से कि आखिरी सितारे के बाद
वह सुबह होगी कहीं.
माना कि यह रात है एक काले समुद्र सी
फिर भी इसका कोई किनारा तो होगा कहीं.

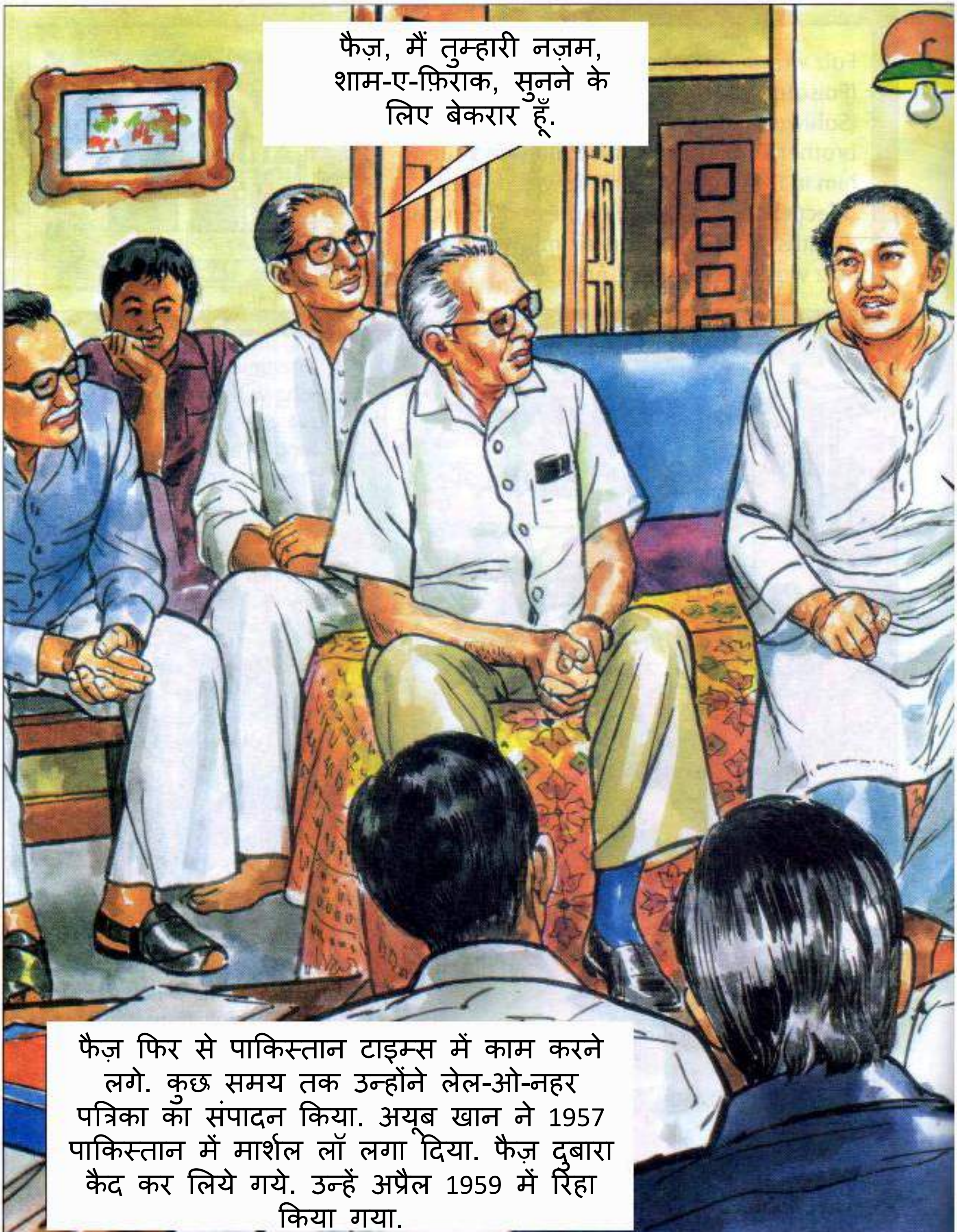

जिस घड़ी, मेरे महबूब.
मन को हौले से छू जाती हैं तुम्हारी यादें
लगता है खत्म हो गयी हैं
जुदाई की रातें
और थाम रखा है मैंने तुम्हें
अपनी बाहों में.


देखो! अब्बा आ गये.
POLICE STATION
LYALLPUR
ल्यालपुर
पुलिस स्टेशन
S.P. POLICE PUNJAB
PAKISTAN
वह अच्छे हैं.


एलिस और बच्चियां फैज़ से मिलने जेल आया करते थे.
खुदा का शुक्र है, तुम ठीक हो! जब तक मैं तुम्हें देख नहीं लेती हूँ, फ़िक्र लगी रहती है.


अच्छा मिज़ू, अपने आठवें जन्मदिन पर तुम्हें क्या तोहफा चाहिए?
मुझे गुड़िया चाहिए, सुनहरे बालों वाली! मुझे बोलने वाली गुड़िया चाहिए!


फैज़ हैदराबाद, लायलपुर, सरगोधा, मोंटगुमरी और लाहौर की जेलों में कैद रहे. उनके बड़े भाई, तुफैल अहमद, हैदराबाद जेल में उनसे मिले. फिर उनका निधन हो गया. फैज़ को भारी सदमा लगा और वह कई महीनों तक उदास रहे. चार साल जेल में बिताने के बाद 2 अप्रैल 1955 को उन्हें रिहा कर दिया गया.
خوش آمدید
جناب فیض احمد فیض
चीमी, मिज़ू! कितनी देर तक जागे रहोगे? कोई नहीं जानता कि फैज़ को घर आने में कितना वक्त लग जाए.
अपने अब्बा की रिहाई पर दोनों इतने खुश हैं कि आज दोनों सो न पायेंगे.
बेशक दादी, हम नहीं सो पायेंगे!


फ़ैज़, मैं तुम्हारी नज़म, शाम-ए-फ़िराक, सुनने के लिए बेकरार हूँ.
फ़ैज़ फिर से पाकिस्तान टाइम्स में काम करने लगे. कुछ समय तक उन्होंने लेल-ओ-नहर पत्रिका का संपादन किया. अयूब खान ने 1957 पाकिस्तान में मार्शल लॉ लगा दिया. फ़ैज़ दुबारा कैद कर लिये गये. उन्हें अप्रैल 1959 में रिहा किया गया.

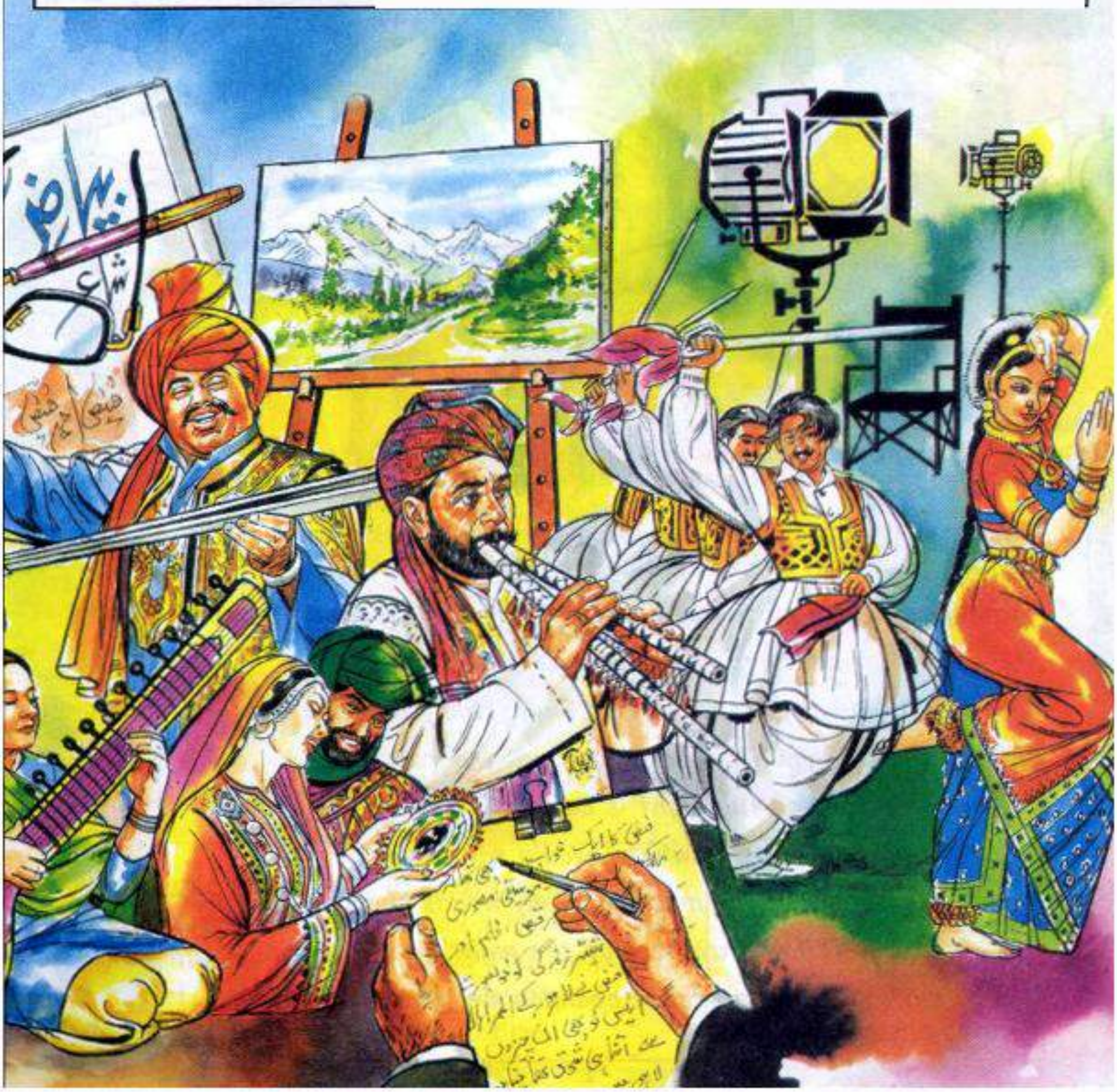


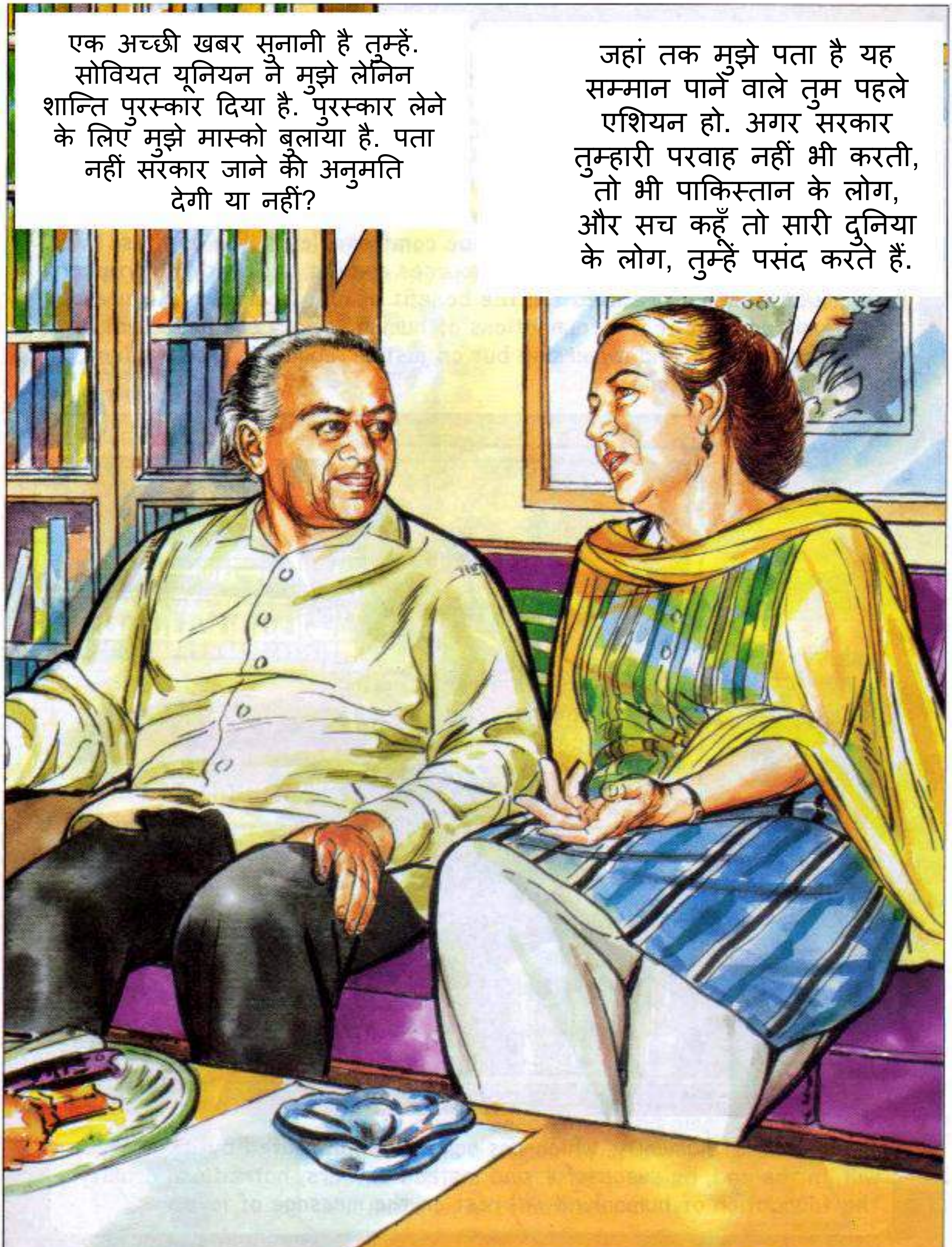
जब 1953 में मैं दो महीनों के लिए कराची के जिन्नाह अस्पताल में था तब मैंने इसे लिखा था. याद आया? तो सुनो......

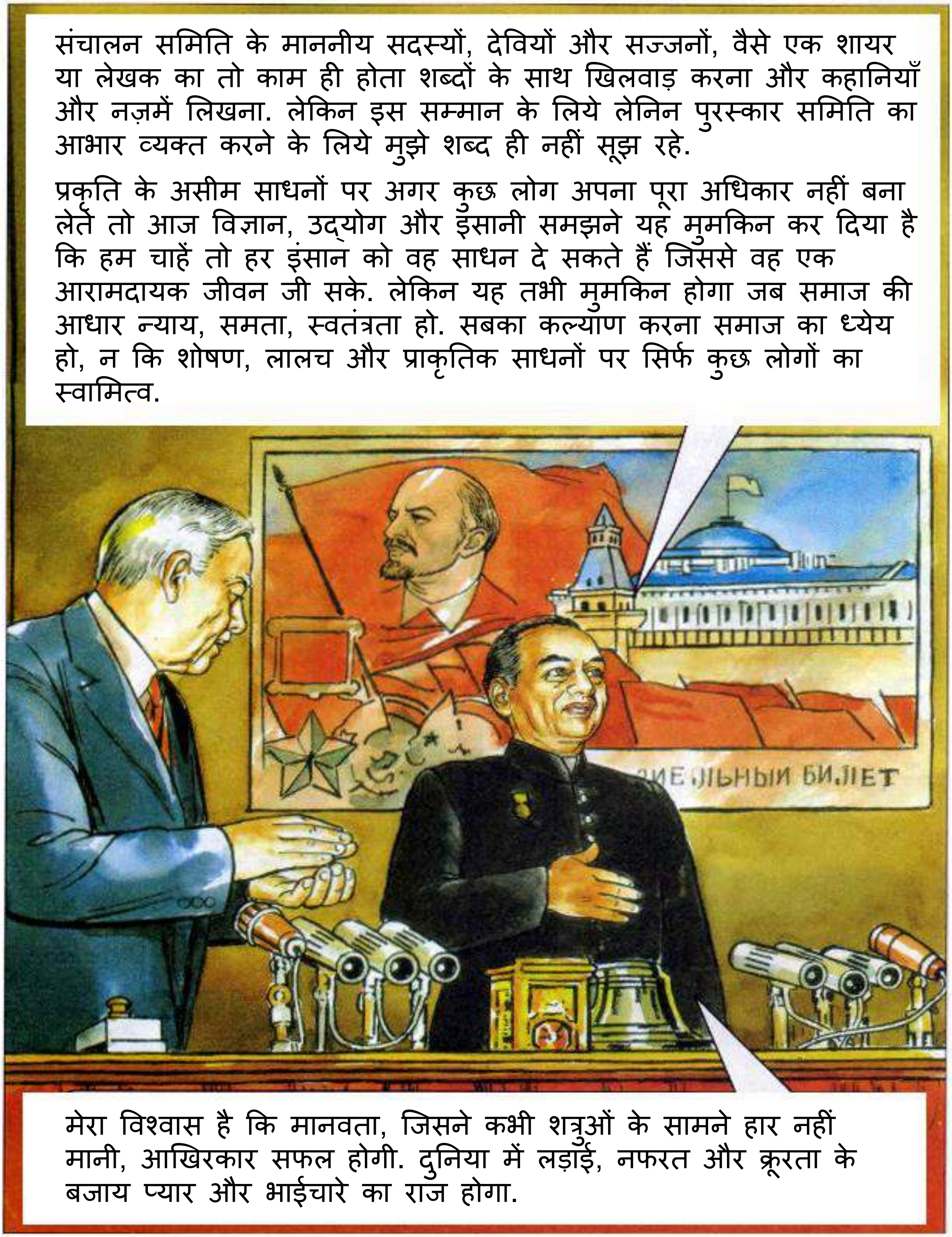
मत याद दिलाओ ना-कामयाबियों का दर्द. वो आया; वो गया.
दिल अभी भी धड़कता है सीने में
तुम्हारी खूबसूरती रोशन कर देती है मेरी सोच, मैं कहाँ हूँ अकेला.
तुम्हारी याद सुबह को महका देती है
लेकिन रात की तनहाई बेहद तड़पा जाती है
जब तुम नहीं थीं तो सब पता था कि क्या है कहना
तुम सामने हो तो शब्द ही साथ नहीं
रात के मेरे वो सब हमसफर कहाँ हैं?
कब सुबह की ब्यार ने छोड़ा साथ
कब पास से निकल गयी सुबह, पता ही नहीं?



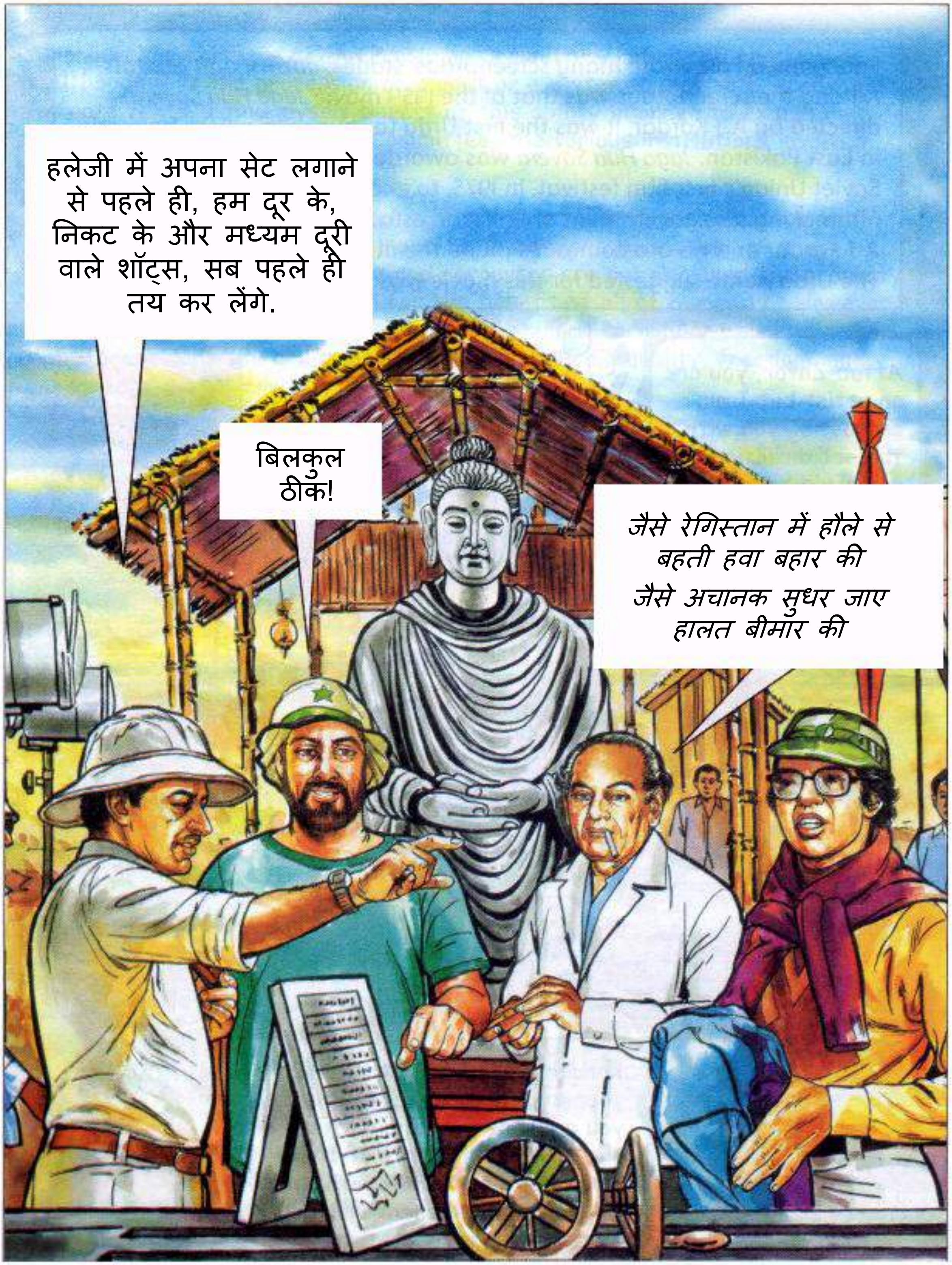
फैज़ की तमन्ना थी कि देश में ललित कलाओं को बढ़ावा मिले. उन्होंने लाहौर की अल्हमारा आर्ट्स कौंसिल में काम करना शुरू किया. संगीत, चित्रकला, नृत्य, फ़िल्में और थिएटर जिंदगी को बनाते हैं. एलिस की भी ललित कलाओं में दिलचस्पी थी. उसने लाहौर में कठपुतली थिएटर शुरू किया. फैज़ इस थिएटर के लिये नाटक लिखते थे और उनकी बेटियाँ उन नाटकों में काम करती थीं.




एक अच्छी खबर सुनानी है तुम्हें. सोवियत यूनियन ने मुझे लेनिन शान्ति पुरस्कार दिया है. पुरस्कार लेने के लिए मुझे मास्को बुलाया है. पता नहीं सरकार जाने की अनुमति देगी या नहीं?
जहां तक मुझे पता है यह सम्मान पाने वाले तुम पहले एशियन हो. अगर सरकार तुम्हारी परवाह नहीं भी करती, तो भी पाकिस्तान के लोग, और सच कहूँ तो सारी दुनिया के लोग, तुम्हें पसंद करते हैं.

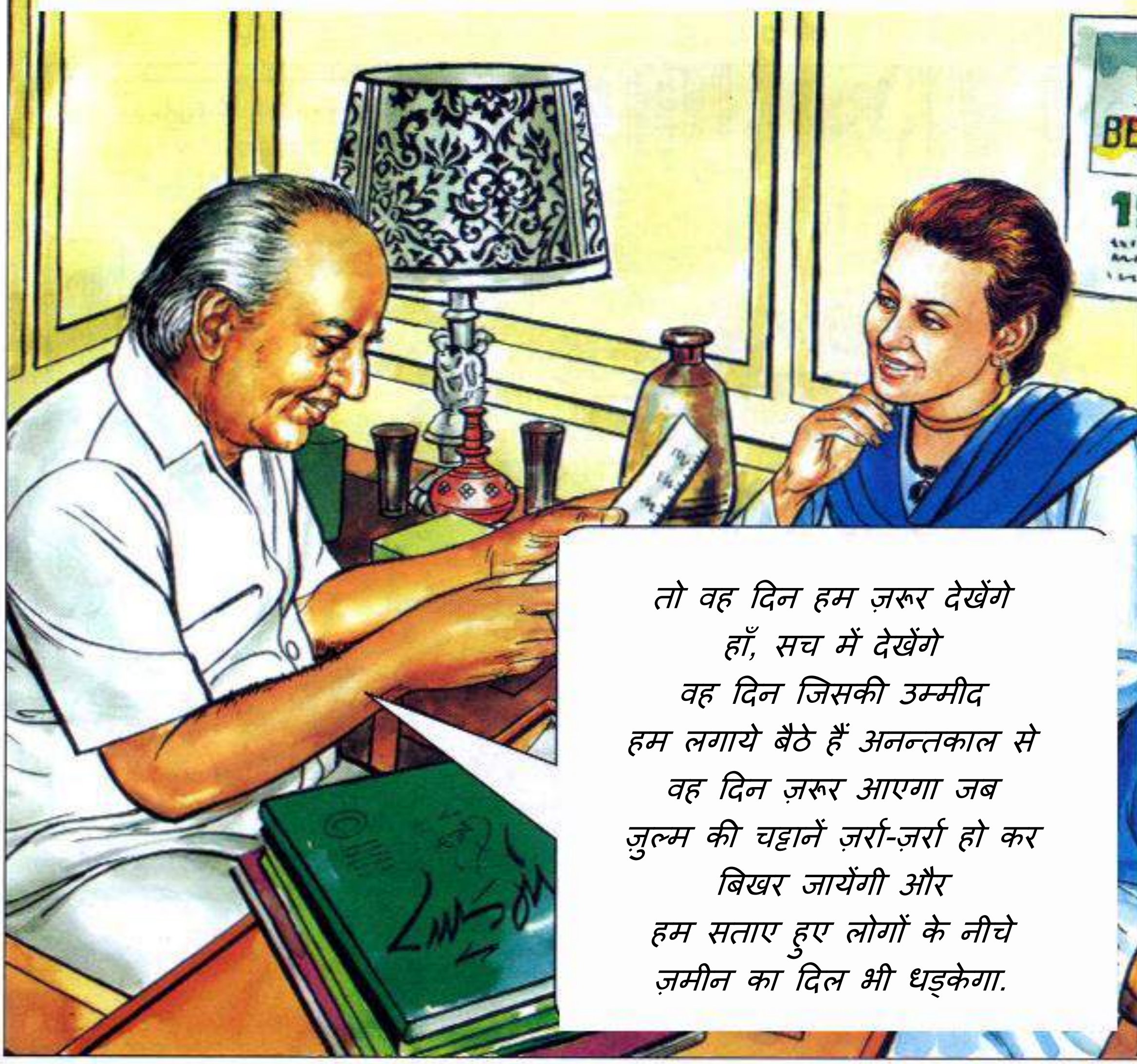

संचालन समिति के माननीय सदस्यों, देवियों और सज्जनों, वैसे एक शायर या लेखक का तो काम ही होता शब्दों के साथ खिलवाड़ करना और कहानियाँ और नज़में लिखना. लेकिन इस सम्मान के लिये लेनिन पुरस्कार समिति का आभार व्यक्त करने के लिये मुझे शब्द ही नहीं सूझ रहे.
प्रकृति के असीम साधनों पर अगर कुछ लोग अपना पूरा अधिकार नहीं बना लेते तो आज विज्ञान, उद्योग और इंसानी समझने यह मुमकिन कर दिया है कि हम चाहें तो हर इंसान को वह साधन दे सकते हैं जिससे वह एक आरामदायक जीवन जी सके. लेकिन यह तभी मुमकिन होगा जब समाज की आधार न्याय, समता, स्वतंत्रता हो. सबका कल्याण करना समाज का ध्येय हो, न कि शोषण, लालच और प्राकृतिक साधनों पर सिर्फ कुछ लोगों का स्वामित्व.
मेरा विश्वास है कि मानवता, जिसने कभी शत्रुओं के सामने हार नहीं मानी, आखिरकार सफल होगी. दुनिया में लड़ाई, नफरत और क्रूरता के बजाय प्यार और भाईचारे का राज होगा.

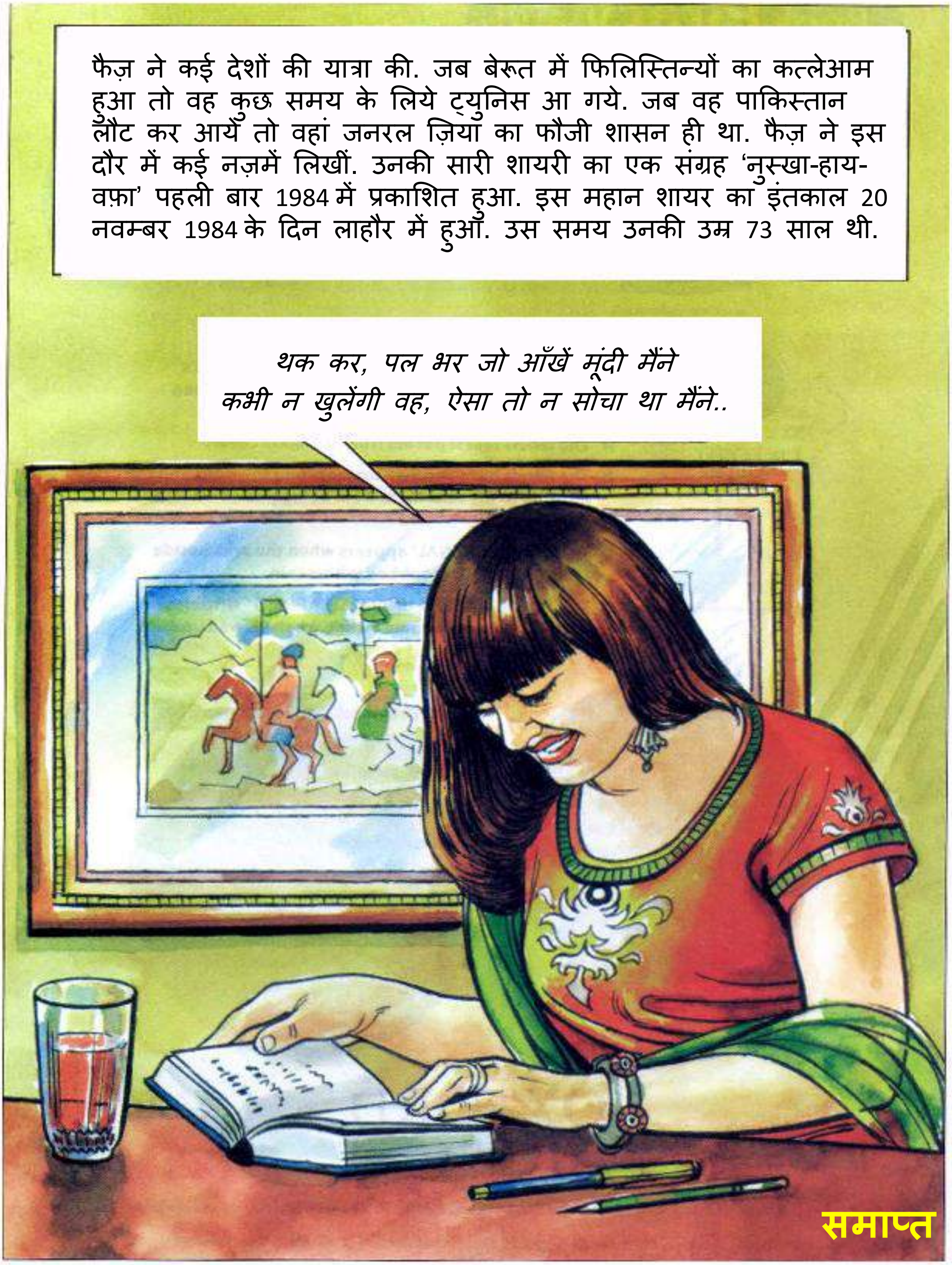

फैज़ अहमद फैज़ ने कई पट-कथाएं, कहानियाँ, नज़में और गज़लें लिखीं. ए. जे. कारदार द्वारा निर्देशित 1959 की फिल्म 'जागो, हुआ सवेरा' की पट-कथा भी फैज़ ने लिखी थी. पूर्वी पाकिस्तान में बनने वाली यह पहली उर्दू फिल्म थी. सोवियत यूनियन के पहले फिल्म महोत्सव में इस फिल्म को स्वर्ण पदक मिला. फिल्मों को बढ़ावा देने के लिए पाकिस्तान सरकार ने 1975 में एनएऍफ़डीईसी का गठन किया. इसके अंतर्गत ए. जे. कारदार ने एक फिल्म बनायी, 'ऑफ़ ह्यूमन हैप्पीनेस'. उर्दू में नाम था 'दूर है सुख का गाँव'.
आफताब ज़फर, तुम एक कलाकार हो. लेकिन मैं अपनी फिल्म में तुम्हें कला निर्देशन का काम दे रहा हूँ क्योंकि मुझे किसी पेशेवर कला निर्देशक पर भरोसा नहीं है.
कारदार साहिब, आपकी उम्मीदों पर खरा उतरने की मैं पूरी कोशिश करूंगा. लैला शेहज़ादा, तुम एक प्रसिद्ध कलाकार हो, इस फिल्म की कॉस्ट्यूम डिज़ाइनर हो. मुझे लगता है कि हम एक साथ एक अच्छी फिल्म बनायेंगे.


हलेजी में अपना सेट लगाने से पहले ही, हम दूर के, निकट के और मध्यम दूरी वाले शॉट्स, सब पहले ही तय कर लेंगे.
बिलकुल ठीक!
जैसे रेगिस्तान में हौले से बहती हवा बहार की जैसे अचानक सुधर जाए हालत बीमार की


पाकिस्तान की पहली प्रजातांत्रिक सरकार ने फैज़ को “पाकिस्तान नेशनल कौंसिल ऑफ़ द आर्ट्स” का अध्यक्ष बना दिया. अब फैज़ इस्लामाबाद आकर रहने लगे. एलिस, पाकिस्तानी दस्तकारी के विकास के लिये काम करने लगी. फैज़ ने चीन, वियतनाम और कम्बोडिया की यात्राएं कीं. बांग्लादेश के बनने के बाद वह प्रधान मंत्री ज़ुलिफिकर अली भुट्टो के साथ ढाका गये. फिर कुछ सालों बाद वह कराची आ गये जहां उन्हें अब्दुल्लाह हारुन कॉलेज का प्रिंसिपल बनाया गया. यह कॉलेज गरीब विद्यार्थियों को शिक्षित करता था.
भुट्टो सरकार का 5 जुलाई 1977 को अंत हो गया और जनरल जिया ने देश में मार्शल लॉ लगा दिया. फैज़ 1978 में युद्ध-ग्रस्त बेरूत आये जहां उनके प्रशंसक और समर्थक, यासेर अराफात रहते थे.
बेरूत में कितने फिलिस्तीन शरणार्थी रहते हैं? यासेर अराफात, मैं दुआ करता हूँ कि आज़ादी के लिये आपका आंदोलन शीघ्र ही सफल हो!

जनरल जिया द्वारा लगाये मार्शल लॉ के समय कई लेखकों, पत्रकारों और फिलास्फरों को सरकार का गुस्सा झेलना पड़ा था. फैज़ 1971 में "पाकिस्तान नेशनल कौंसिल ऑफ़ द आर्ट्स" के अध्यक्ष बने थे और 1973 में वह सरकार के सांस्कृतिक सलाहकार थे. लेकिन मार्शल लॉ लागू होने पर 1978 में, बेरूत में रहते हुए, उन्होंने त्यागपत्र दे दिया. उस समय उनकी फिल्म 'दूर है सुख का गाँव' संपादित की जा रही थी. लेकिन फिल्म कभी रिलीज़ ही नहीं हुई और कोई नहीं जानता कि फिल्म की रीलों का क्या हुआ. फैज़ को इस बात का बड़ा दुःख हुआ. बेरूत में फैज़ ने लोटस नामक एशियन-अफ्रीकन साहित्यिक जर्नल का संपादन किया.





(नज़मो की सब पंक्तियां इंग्लिश अनुवाद से अनुवादित की गई हैं)